अध्याय–1

ध्वनि

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) कवि के जीवन में मृदुल वसंत आया है।

   (ख) 'ध्वनि, कविता के रचयिता हैं–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।

   (ग) पत्ते हरे-हरे हैं।

   (घ) निद्रित कलियों पर।

   (ङ) कवि फूलों से तंद्रालस लालसा ले लेने की बात कहता है।

   (च) कवि समाज में व्याप्त तंद्रा को दूरकर सर्वत्र स्फूर्ति, प्राण का संचार करना चाहता है।

   (छ) 'कलियाँ' शब्द अलसायी कलियों के द्वारा नई युवा पीढ़ी के लिए प्रयुक्त हुआ है।

3. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि निराला ने आशावादी संदेश देते हुए कहा है कि अभी-अभी तो हमारे जीवन में नया वसंत आया है। आज हज़ारों वर्षों से हम परतंत्रता की पीड़ा झेलते हुए मृतप्राय थे। अभी तो हमारे जीवन में खुशहाली रूपी वसंत आया है। अभी हमारा अंत नहीं होगा। कवि आशावादी है।

4. (क) (iv) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (ii) (ङ) (iii)

5. (क) कवि ने इस कविता के माध्यम से स्वयं को आशावादी होने का संदेश देते हुए कहा है कि अभी-अभी तो हमारे जीवन में वसंत का, प्रसन्नता का, स्वतंत्रता का आगमन हुआ है। हम इस जीवन को भरपूर जिएंगे। अभी हमारा अंत होने वाला नहीं है। कवि आशावादी हैं, वे कहते हैं अपने लक्ष्य की पूर्ति करने से पहले हमारा अन्त नहीं होगा।

   (ख) वसंत के आगमन से कवि का जीवन हरा-भरा हो गया है ठीक उसी तरह से जैसे वसंत ऋतु के आगमन से पौधे हरे-भरे हो उठते हैं। नए-नए फूल लगकर वातावरण को सुगंधमय कर देते हैं। पेड़-पौधों पर हरी-हरी डालियाँ लहलहा उठती हैं, नई-नई कलियाँ प्रस्फुटित होकर वृक्षों की शोभा में वृद्धि करती हैं, उसी प्रकार इस स्वतंत्रतारूपी वसन्त के आगमन से कवि का जीवन भी हरा-भरा होने लगा है।

   (ग) 'ध्वनि' कविता के माध्यम से कवि समाज के हताश, निराश लोगों के जीवन को खुशियों से भरना चाहते हैं। सब लोगों में आशा का संचार करना चाहते हैं। वे लोगों को साहसपूर्वक जीने का संदेश देना चाहते हैं और कहते हैं कि जिस प्रकार वसंत के आने पर सर्वत्र हरियाली, खुशहाली व्याप्त हो जाती है उसी तरह हमारे जीवन में भी खुशहाली आएगी।

   (घ) कवि तंद्रालु कलियों को नवप्रभात और नए सूर्य के उदय होने की आशा दिलाकर जगाने का प्रयास करता है। वह संदेश देता है कि कलियों (भारत की युवा पीढ़ी) निद्रा से जागो क्योंकि नए सूर्य के साथ नवप्रभात का आगमन हो रहा है।

   (ङ) कवि फूलों के माध्यम से युवा पीढ़ी को आशावादी संदेश देते हुए कह रहा है कि अपने नेत्रों में व्याप्त आलस्य को दूर भागाओ। अब दोनों आँखें खोलकर जीवन में आने वाले विकास और उन्नति रूपी नव प्रभात का स्वागत करो।

6. (क) जंगल कानन

   (ख) शरीर काया

(ग) सुधा पीयूष

(घ) दरवाज़ा डयोढ़ी

(ङ) नवीन नया

(च) इच्छा उम्मीद

7. (क) अ + न् + त् + अ

(ख) म् + ऋ + द् + उ + ल + अ

(ग) स् + व् + अ + प् + न् + अ

(घ) प् + र् + अ + त् + य् + उ + ष् + अ

(ङ) त् + न् + अ + द् + र् + आ + ल् + अ + स् + अ

(च) अ + म् + ऋ + त् + अ

8. (क) हम अभी-अभी घर पहुँचे हैं।

(ख) हरे-हरे वृक्ष वनों की शोभा हैं।

(ग) वाटिका में पुष्प-पुष्प पर मधुमक्खियाँ भिन-भिना रही हैं।

(घ) वसंत ऋतु का आगमन हुआ है। फूल-फूल पर भँवरे मँडरा रहे थे।

(ङ) संन्यासी बनने से पूर्व द्वार-द्वार पर भिक्षा माँगनी पड़ती है जिससे मन से 'मैं', 'मेरा' का भाव समाप्त हो जाए।

10. ऋतु परिवर्तन का मनुष्य के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। पतझड़ के बाद वसंत का आगमन होने पर जीवन में एक नई स्फूर्ति, नयी उमंग उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य में कुछ नया कर जाने का विचार जन्म लेता है। पतझड़ में मनुष्य तंद्रालु होता है, शिथिलता और जड़ता के कारण मनुष्य कर्म से विरल रहता है। ऋतु परिवर्तन से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। हम शीत ऋतु से ग्रीष्म ऋतु में प्रवेश करते हैं तो वनस्पति जगत तो पतझड़ का शिकार होता है और मनुष्य कई तरह की बीमारियों का शिकार हो सकता है। ठीक इसी तरह जब ग्रीष्म से शीतकाल का संक्रमण होता है तब स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

अध्याय–2

लाख की चूड़ियाँ

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) बदलू लेखक को बचपन में लाख की गोलियाँ बनाकर देता था।

(ख) बदलू अपना काम घर के सामने स्थित नीम के पेड़ के नीचे बैठकर किया करता था।

(ग) गाँव में लेखक का दोपहर का समय अधिकतर बदलू के यहाँ बीतता था।

(घ) बदलू का पैतृक पेशा लाख की चूड़ियाँ बनाना था।

(ङ) बदलू लेखक को लला कहकर पुकारता था।

(च) लेखक के मामा की बेटी आंगन में फिसलकर गिर पड़ी जिससे उसके हाथ की काँच की चूड़ियाँ टुटकर चुभ गई और उससे खून बहने लगा।

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (i)
(च) (iv)

4. (क) इस पंक्ति का आशय यह है कि काँच की चूड़ियाँ मशीन से बनती हैं और काँच में चमक होती है परंतु लाख की चूड़ियाँ हाथ से बनती हैं। उसकी बनावट वैसी नहीं होती जैसी मशीन की बनी काँच की चूड़ियों की होती है। लाख की चूड़ियाँ बन जाने पर रंगाई की जाती है पर उसमें वैसी चमक नहीं होती।

(ख) इस काव्य का आशय यह है कि बदलू का व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों के समान क्षणभंगुर नहीं था। वह दृढ़ व्यक्तित्व का धनी था। तनिक से धक्के से बिखरने वाला नहीं था और न स्वार्थ में बदल जाने वाला।

5. (क) बदलू एक सीधा-सादा ग्रामीण व्यक्ति था जो मनिहार का काम करता था। वह लाख की चूड़ियाँ बनाता था। उसकी चूड़ियाँ बहुत सुंदर होती थीं। जिसे उस गाँव के लोग पहनते ही थे, आस-पास के गाँव के लोग भी उसकी चूड़ियाँ ले जाया करते थे। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। वह कभी भी किसी से लड़ता-झगड़ता नहीं था। चूड़ियों के दाम वह किसी से नहीं लेता था। उसके बदले अनाज आदि ले जाता था। परंतु शादी-ब्याह के अवसर पर बहुत जिद्द करता था और यही अवसर होता था उदारता का प्रतिदान लेने का।

(ख) काफी लंबे समय बाद लेखक जब अपने मामा के गाँव आए तो उस समय तक बदलू उनकी स्मृति पटल से मिट गया था। एक दिन अचानक लेखक के मामा की लड़की आँगन में फिसलकर गिर गई जिससे उसके हाथ की काँच की चूड़ियाँ टूटकर उसके हाथ में चुभ गई जिससे काफी खून बहने लगा। उस समय घर पर किसी के न रहने के कारण लेखक को ही मरहम पट्टी करनी पड़ी। उसी समय लेखक को बदलू का ध्यान आया।

(ग) काँच की चूड़ियों के प्रचलन के बाद बदलू का चूड़ियों का धंधा बंद हो गया था। काँच की चूड़ियों के सामने लाख की चूड़ियों की सुंदरता फीकी पड़ गई थी। लोग काँच की चूड़ियाँ ही पहनने लगे थे। जिससे बदलू की रोजी-रोटी छिन गई थी। लेखक के बहुत दिनों बाद मिलकर पूछने पर बदलू का मन दुखी हो उठा। इससे लेखक को बदलू के मन की व्यथा की अनुभूति हुई।

(घ) लेखक आठ-दस वर्ष बाद जब अपने मामा के गाँव आए तो उन्होंने देखा कि यहाँ गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ अब लाख की चूड़ियों के स्थान पर काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी हैं। विरले हाथों में ही लाख की चूड़ियाँ दिखाई दीं।

(ङ) बदलू द्वारा लाख की चूड़ियाँ बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार थी–बदलू सबसे पहले लाख को भट्टी में पिघलाया करता। पिघलने पर सामने पड़ी लकड़ी की चौखट पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता फिर बेलननुमा मुगेरियों जो आगे से पतली और पीछे से मोटी होती थीं, उनपर लाख की चूड़ियों को चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता। तब एक-एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बन जाने पर वह उन पर रंग करता।

(च) आठ-दस साल बाद बदलू से मिलने पर बदलू के व्यवहार में लेखक ने वही अपनत्व देखा जो लेखक के प्रति बदलू का था। बदलू की परिस्थितियाँ भले ही बदलीं पर उसके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया था। वही प्रेम, वही आदर भरा अपनत्व आज भी था। इसलिए लेखक प्रसन्न था।

(छ) शादी–ब्याह के अवसर पर बदलू अपना हक लेने के लिए जिद्द पर उतर जाता था क्योंकि सुहाग के जोड़े का सामाजिक महत्त्व था और उस अवसर का लाभ बदलू अच्छी तरह लेता था और लोग प्रसन्नतापूर्वक उसकी जिद्द पूरी भी करते थे।

(ज) मशीनी युग के प्रभाव के कारण हस्तकला पर आधारित कारोबार बुरी तरह प्रभावित हुए। उसका प्रभाव बदलू के लाख की चूड़ियाँ बनाने के कारोबार पर भी पड़ा। मशीनी युग में काँच की चूड़ियों के प्रचलन से लाख की चूड़ियों का धंधा समाप्त हो गया क्योंकि काँच की चूड़ियाँ अधिक चमकदार होती हैं।

6. (क) अपने वश में कर लेना – अंशुल के विशिष्ट व्यवहार ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों का मन मोह लिया।

(ख) बदला लेना – रमेश ने मोहन को भरी कक्षा में अपमानित कर अपनी कसर निकाल ली।

(ग) मन में उठी शंका को जान लेना – अनुज ने सविता के मन में उठी शंका को भाँप लिया।

(घ) बुढ़ापे की ओर अग्रसर होना – जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है शरीर ढलता जाता है।

(ङ) अधिकारच्युत हो जाना – यह जाँच हमारे वरिष्ठ अधिकारी के हाथ में चले जाने से हमारे हाथ कट गए। अब हम कुछ नहीं कर सकते।

7.

(क)	रंगीन	रंगीला	रंगदार
(ख)	चित्रण	चित्रात्मक	चित्रकार
(ग)	पढ़ना	पढ़ाई	पढ़ाकू
(घ)	शांत	चित्त	शांताकार

8. (क) भूल – भूल वश मैं अपना गृहकार्य न कर सका।

भूल – मैं अपनी भूल सुधारने का प्रयत्न करुँगा।

(ख) हार – कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना को हार का मुँह देखना पड़ा।

हार – यह हार बहुत कीमती है। इसमें हीरे जड़े हैं।

(ग) लाख – यह चूड़ियाँ लाख की बनी हैं।

लाख – मोहन इस समय लाखों का मालिक है।

(घ) आम – भारत का आम आदमी अनुच्छेद 370 के समाप्त होने से प्रसन्न है।

आम – इस साल आम की फसल कम हुई है।

(ङ) उत्तर – हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित है।

उत्तर – निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50–80 शब्दों में लिखें।

9. (क) अच्छाई (ख) शारीरिक

(ग) बड़ाई (घ) प्रसन्नता

(ङ) सुंदरता (च) हँसी

10. आज का युग मशीनी युग है। मशीनी युग परिवर्तनशील युग है। यह तकनीक पर आधारित है। जैसे-जैसे तकनीक में सुधार होता है मशीनों और उनकी कार्य-प्रणाली भी बदल जाती है। इस परिवर्तन से हानि भी होती है और लाभ भी। हानि कम होती है और लाभ कम। उदाहरण के तौर पर कंप्यूटर को लीजिए। कंप्यूटर के आरंभिक युग और आज के युग में भारी बदलाव आया है। कार्य-क्षमता और गुणवत्ता दोनों में परिवर्तन हुआ है। आज उन कंप्यूटरों का कोई उपयोग नहीं रह गया है। यह मशीन का नकारात्मक पहलू है। परंतु तकनीक में विकास होने से कार्य की गुणवत्ता परिष्कृत हुई है। यह सकारात्मक पहलू है।

11. परिवर्तन संसार का नियम है और परिर्वतन समय की मांग भी है। समय के परिवर्तन के साथ संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान और परिधान सबमें परिवर्तन आता है। बदलाव से रूढ़ियाँ टूटती हैं, नयी सभ्यता का जन्म होता है। इससे समाज की क्षति भी होती है और समाजिक विकास भी होता है। परिर्वतन होते समय वर्तमान समय के अनुसार सामाजिक क्षति प्रतीत होती है पर आगामी समय में वही सभ्यता बन जाती है। हमें याद है– सन 1980 में राज कपूर के निर्देशन में 'सत्यम शिवम सुंदरम' फ़िल्म बनी थी। उस फ़िल्म की बहुत आलोचना हुई थी एक सीन पर । आज वैसे सीन समाज में आमतौर पर देखने को मिलने लगे हैं। यह युग परिवर्तन का प्रभाव है।

अध्याय-3

बस की यात्रा

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) लेखक और उसके मित्र पन्ना से जबलपुर जाना चाहते थे।
   (ख) उस बस का फ़ायदा यही था कि वह बस जबलपुर की ट्रेन से मिला देती है।
   (ग) लोगों ने लेखक को सलाह दी कि समझदार आदमी शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते।
   (घ) इंजन के चलने पर लेखक को लगा कि यह बस गांधी जी के असहयोग और अवज्ञा आंदोलन के समय अवश्य जवान रही होगी।
   (ङ) आठ-दस मील चलने पर बस इसलिए रुक गई क्योंकि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया।
   (च) आठ-दस मील चलने पर हम बस की दशा और चाल के अभ्यस्त हो गए।
   (छ) यदि बस तेज़ गति में होती तो टायर की हवा एकाएक निकलते ही बस नाले में जा गिरती।

3. (क) यह संसार जीवन-मरण धर्मी है। जो इस संसार में जन्म लिया है, उसे एक दिन तो मरना ही है। जो इस मृत्युलोक में आया है उसे एक दिन सांसारिक मोह-माया से मुक्त होना ही है। जो इस संसार में जन्म लिया, चाहे राजा हो या रंक हो, उसे एक दिन जाना ही होगा।
   (ख) चंद्रमा के हल्के क्षीण प्रकाश में वृक्षों की छाया में खड़ी वह जीर्ण-शीर्ण बस की स्थिति बहुत सोचनीय थी। बस के प्रत्येक भाग एक-दूसरे से असहयोग कर रहे थे। ऐसी दशा में बस की स्थिति एक वृद्धा के समान थी जो थक-हार कर एक जगह बैठ गई हो।

4. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (ii) (घ) (iv) (ङ) (iii)
   (च) (iv)

5. (क) लेखक और उसके मित्र शाम चार बजे की बस से इसलिए जाना चाहते थे कि पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए एक घंटे बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन से मिला देती है जिससे प्रात: घर पहुँच जाएँगे।
   (ख) बस को देखने के बाद लेखक को लगा कि यह बस गांधी जी के असहयोग और अवज्ञा आंदोलन के समय अवश्य जवान (नई) रही होगी। बस की वयोवृद्ध आयु देखते हुए उसके मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसे लगा कि लोग इसीलिए इस बस से यात्रा नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा।

(ग) बस के पुलिया के पास पहुँचते ही बस के एक टायर की हवा फुस्स से निकल गई और बस बहुत ज़ोर से हिल गई। यदि बस तेज़गति में चल रही होती तो उछलकर नाले में गिर गई होती।

(घ) दूसरी बार रुकी बस को क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे खड़ी वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी, ऐसा लग रहा था, कोई वृद्धा थक-हार कर बैठ गई है। लेखक सोचने लगा, अब बस का सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हो गया है।

(ङ) लेखक अपने मित्रों के साथ जिस बस से यात्रा कर रहा था, बस अभी पन्ना से आठ-दस मील चली ही थी कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया। ड्राइवर ने पेट्रोल टंकी में से बाल्टी में ले लिया और एक पाइप के सहारे इंजन में भेजने लगा। लेखक को लगा कि बस के हिस्सेदार इंजन को उठाकर गोद में लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पहुँचाएँगे। जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

(च) लेखक बस की स्थिति देखकर इतना घबराया हुआ था कि जब बस के सामने सड़क के किनारे स्थित पेड़ से बस आगे निकल जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देता। उसे डर लग रहा था कि बस कहीं किसी पेड़ से न टकरा जाए। इसीलिए वह सभी पेड़ों को दुश्मन समझ रहा था।

(छ) लेखक ने पन्ना पहुँचने की उम्मीद इसलिए छोड़ दी थी कि बस की हालत बहुत खराब थी। उसके टायर एक ही नहीं, सभी खराब थे। पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था। लेखक पन्ना तो क्या, कहीं भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ चुका था। बस की दशा ऐसी जीर्ण-शीर्ण थी कि कब क्या हो जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता था।

(ज) बस की जीर्णता को देखते हुए, बस की सीटों, बस के टायर, बस की पूरी काया देखकर लेखक ने व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहा कि यह बस गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन और असहयोग आंदोलन के समय जवान रही होगी। वह बस चलने की स्थिति में नहीं थी फिर भी चलने के लिए विवश की जा रही थी।

(झ) बस कंपनी के हिस्सेदार को बस की दशा की पूरी जानकारी थी। बस के टायर, बस की सीटों आदि की स्थिति की जानकारी होने पर भी इस बात से यात्रा कर रहे थे, उनकी इस हिम्मत पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने कहा कि हिस्सेदार महोदय टायरों की दशा जानते हुए भी अपने प्राणों को हथेली पर लेकर इस बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। इन्हें किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए।

6. (क) विश्वसनीय (ख) दुर्गम (ग) अंत्येष्टि (घ) प्राणांत (ङ) असहयोग
(च) जरावस्था

7. (क) अविश्वसनीय (ख) प्रारंभिक (ग) असहयोग (घ) रंक (ङ) जाना
(च) सुलभ

8. (क) बस कंपनी के हिस्सेदार भी बस में बैठे थे।
(ख) आज ईमानदार और सत्यनिष्ठ आदमी मिलना दुर्लभ है।
(ग) उस समय प्रकृति बहुत सुहावनी थी।
(घ) बस पन्ना मार्ग पर धीरे-धीरे सरक रही थी।
(ङ) आज पिता जी के प्रति अपने व्यवहार पर मुझे बहुत ग्लानि हुई।

9. **बस यात्रा का अनुभव**—हमने दिल्ली से कटरा, जम्मू बस द्वारा जाने की योजना बनाई। हम लोग चार मित्र थे। चारों मित्र हमउम्र, और समान विचार के थे। अगस्त का महीना था। बरसात के दिन थे। हमें बरसात के महीने में वैष्णो देवी जाने पर वहाँ से बादल की उठती घटाएँ और बादलों का उड़ते हुए शरीर से टकराना बहुत सुंदर लगता है। हम लोगों की यह यात्रा बहुत सुखद रही। बस जब नरेला पारकर हरियाणा में प्रवेश की तो पंजाब तक जी. टी. रोड के दोनों तरफ़ लहलहाती धान की फ़सल बहुत ही मनोरम दृश्य उपस्थित कर रही थी। जब वह जम्मू से कटरा के लिए आगे बढ़ी तो पहाड़ियों का दृश्य बहुत ही सुंदर और अवर्णनीय था।

10. गांधी जी द्वारा चलाया जाने वाला यह प्रथम जन आंदोलन था जिसे शहरी और ग्रामीण सबका जन समर्थन मिला था। इसमें सरकार के प्रति असहयोग की नीति मुख्य रूप से अपनाई गई। इस आंदोलन में ग्रामीणों, आदिवासियों एवं शहर के लोगों का व्यापक समर्थन मिला। असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में सन 1920 में पारित हुआ था। यह आंदोलन

अंग्रेज़ सरकार की दमन नीति का परिणाम था। सन 1921 में कुल 396 हड़तालें हुई थी जिसमें सरकारी आँकड़े के अनुसार 6 लाख श्रमिक वर्ग ने भाग लिया था। यह आंदोलन बहुत सफल रहा।

अध्याय-4

दीवानों की हस्ती

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

(च) ✓

2. (क) कवि ने स्वयं को दीवाना कहा है।

(ख) दीवानों के जीवन में उल्लास और आँसू, सुख और दुख सब कुछ सामने आता है परंतु उससे बेफिक्र होकर आगे बढ़ते जाना ही उनका लक्ष्य होता है।

(ग) दीवाने बेफिक्र प्रकृति के होते हैं। त्याग और बलिदान उनकी प्रवृत्ति होती है।

(घ) दीवाने सुख और दुख दोनों को स्वीकार करते हैं, एक भाव से। वे हँसी और रुदन दोनों शिरोधार्य कर आगे बढ़ते हैं।

(ङ) दीवाने जहाँ भी चलते हैं, मस्ती और उल्लासरूपी धूल उड़ाते चलते हैं।

(च) दीवानों की हस्ती कविता के कवि का नाम भगवतीचरण वर्मा है।

(छ) दीवाने उल्लास, प्रसन्नता, मस्ती बनकर आते हैं।

3. (क) आए बनकर **उल्लास अभी**

आँसू बनकर बह चले अभी,

सब कहते ही रह गए, अरे

तुम कैसे आए, कहाँ चले?

(ख) हम दीवानों **की क्या हस्ती,**

हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले

मस्ती का **आलम साथ चला,**

हम धूल उड़ाते जहाँ चलें।

4. प्रस्तुत पद्य के रचयिता भगवती प्रसाद वर्मा कहते हैं–इस संसार में न कोई पराया है और न कोई अपना। कवि कहता है कि वह स्वयं इस बंधनों में बँधा था और स्वयं इन बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ चले हैं। कवि रुकने वालों को, आबाद रहने वालों के प्रति दुआ देता है कि वे आबाद रहें। जो सदैव चलते रहना चाहते हैं वे सारे बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ जाते हैं।

5. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (ii)

(च) (ii) (छ) (i)

6. (क) कवि ने दीवानों की अनेक विशेषताएं बताई हैं। वे कहते हैं कि हम दीवानों की अपनी कोई निजी हस्ती (संपत्ति) नहीं है। इन दीवानों का सारा संसार है। वे जहाँ भी जाते हैं, मस्ती का आलम उनके साथ चलता है। इन दीवानों का न अपना कोई सुख है और न दुख। ये लोगों के सुख में सुखी हैं और लोगों के दुख में दुखी होते हैं। मस्ती के आलम के साथ चलते हैं दूसरों को सुख बाँटते चलते हैं और उनके दुख स्वयं ग्रहण कर आगे बढ़ जाते हैं। ये मस्ताने आज यहाँ, कल कहाँ होंगे यह कोई निश्चित नहीं है।

(ख) दीवाने स्थिर होकर एक जगह नहीं रहते क्योंकि उनका अपना निजी कुछ नहीं होता। ये दीवाने पूरे देश को अपना मानते हैं। ये जहाँ भी पहुँचते हैं सब उनका अपना हो जाता है। वे मस्ती से भरे हुए सर्वत्र अलख जगाए हुए आगे बढ़ जाते हैं। ये अपनी मस्ती सर्वत्र बाँटते हुए आगे बढ़ जाते हैं। ये सर्वत्र सबके सुख-दुख बाँटते हुए, स्वतंत्रता, उन्मुक्तता की अलख जगाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं।

(ग) 'दीवानों की हस्ती' कविता में कवि ने संदेश दिया है कि इस संसार में न कोई अपना है और न पराया। रिश्ते और संबंध मनुष्य स्वयं निर्मित करता है। मनुष्य का स्वभाव सर्वे भवन्तु सुखिन: का होना चाहिए। कवि ने दीवानों की मस्ती के माध्यम से संदेश दिया है कि दीवाने जहाँ भी जाते हैं खुशियाँ बाँटते हैं, उनके आँसू बाँटने का प्रयत्न करते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं। यह स्वभाव मनुष्य का होना चाहिए।

(घ) 'दीवानों की हस्ती' कविता में कवि ने अपने ढंग से अपना जीवन जीने तथा सर्वत्र प्यार और खुशियाँ बाँटने का संदेश देने का प्रयत्न किया है। उन्होंने यह बताने का प्रयत्न किया है कि मनुष्य जीवन एक श्रेष्ठ जीवन है। इस जीवन को पशुवत न बनाते हुए अपने निजी स्वार्थ के लिए मनुष्यता को छोड़ देना उचित नहीं है। यहाँ न कुछ अपना है और न पराया। यही प्रेम ऐसा है जिसे बाँटने पर प्रतिदान में अपनत्व मिलता है।

(ङ) कवि इस संसार को भिखमंगों का संसार कहते हैं क्योंकि यहाँ सब लेने के ही इच्छुक कुछ देने को तैयार नहीं है यहाँ तक कि अपना प्यार भी लुटाने को तैयार नहीं हैं। ऐसी भिखमंगों की दुनिया में ये देश-प्रेमी दीवाने अपना स्वच्छंद प्यार लुटाकर, उनका सुख-दुख बाँटते आगे बढ़ चले।

(च) कवि अपने ह्रदय पर भारत की परतंत्रता का भार लिए जा रहा है। वह न तो भारत की स्वतंत्रता को वरण कर सका है और न इन भिखमंगों की बस्ती में प्यार, उदारता और देशभक्ति का अलख जगा सका है। इसका उसे कष्ट है। वह जानता है, जिस दिन देशवासी स्वार्थ से उठकर आपस में प्रेम, विश्वास, त्याग, उदारता अपना लेंगे भारत की परतंत्रता अपने आप समाप्त हो जाएगी।

(छ) देश-प्रेम के दीवाने सुख-दुख को समान समझते हैं और समयानुसार दोनों को स्वीकार करते हैं। उनका लक्ष्य आगे बढ़ना है। वे उल्लास लेकर आए और आँसू ग्रहण कर आगे बढ़ गए। वह किस ओर जा रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं, इसका उनको स्वयं ही नहीं पता क्योंकि पूरा संसार ही उनका घर है।

7. (क) अनेक (ख) पराया (ग) दुख (घ) सफलता (ङ) लेना

(च) अनुल्लास

8.

उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
अ	सफल	ता

9. एक निसानी-सी उरपर में उपमा अलंकार है।

10. (क) हस्तियाँ (ख) बातें (ग) असफलताएँ (घ) भिखमंगे

11. विद्यार्थी स्वयं करें (शिक्षक से सहायता लें)

12. दीवानों के सभी गुण ग्रहण करने योग्य हैं। यदि आपका मन देश-प्रेम के लिए दीवाना है, यदि मन में परमार्थ का दीवानापन है, सबके लिए सुख-दुख में सम्मिलित होने का जज़्बा है तो यही जीवन का परम लक्ष्य है। ऐसे लोग संसार में अपना नाम अमर कर जाते हैं और वह तो वास्तव में दीवाने ही हैं जो अपने घर-परिवार का मोह देश पर, न्योछावर कर देते हैं। अपना संपूर्ण जीवन लोगों को सुख-दुख में न्योछावर कर देते हैं।

अध्याय-5

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) प्रतिदिन साढ़े चार करोड़ चिट्ठियाँ डाली जाती हैं।

(ख) पत्र-लेखन ने एक कला का रूप ले लिया है।

(ग) संचार साधनों के बावजूद व्यापारिक डाक की संस्था लगातार बढ़ रही है।

(घ) राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नई घटनाओं की जड़ में पत्र ही होते हैं।

(ङ) गाँवों या निर्धन बस्तियों में चिट्ठियाँ/मनीऑर्डर लेकर पहुँचने वाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

(च) फैक्स, ईमेल, टेलीफ़ोन तथा मोबाइल।

(छ) बड़े-बड़े लेखक, पत्रकार, उद्‌यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान आदि की पत्र रचनाएँ अनुसंधान का विषय हैं।

3. (क) हमारे देश में सीमा पर तैनात सैनिकों के लिए पत्र ही एकमात्र संचार के साधन हैं जिसके द्‌वारा उन्हें अपने घर-परिवार का समाचार प्राप्त हो पाता है। कारगिल या चीन के बार्डर पर रहने वाले सैनिकों को मोबाइल सेवाएँ या दूसरी संचार सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। उनका एकमात्र साधन पत्र ही है जिसका बड़ी बेसब्री से वे इंतज़ार करते हैं।

(ख) जब संचार साधन इतने विकसित नहीं थे तब आम आदमी का संचार माध्यम पत्र ही था। परंतु विकसित हो जाने के बावजूद तमाम महान हस्तियों ने, लेखकों ने पत्र का दामन नहीं छोड़ा। इसका कारण है–पत्र केवल हाल-चाल जानने मात्र का साधन नहीं है वरन यह अपने जीवन की खट्‌टी-मीठी अनुभूतियों, अनुभवों को समाज को बाँटने का भी साधन है। इसीलिए देश के महान हस्तियों ने पत्र का प्रयोग सदैव किया।

4. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (i)
(च) (iii)

5. (क) पत्र-लेखन को कला मानते हुए विश्व डाक-संघ ने 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए पत्र-लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन 1972 से भारत में शुरू किया। संचार माध्यमों के विकसित हो जाने पर भी पत्र-लेखन की कला प्रभावित नहीं हुई। हाँ, जो लोग केवल समाचार आदान-प्रदान का साधन मात्र मानते थे, वे लोग पत्रों से हटकर नवीन संचार माध्यमों की ओर आकर्षित हो गए। परंतु बुद्‌धिजीवी वर्ग, महान हस्तियाँ पत्र को ही अपने अनुभवों को व्यक्त करने का साधन मानते रहे।

(ख) सन 1953 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था–पूरे संचार में हजारों वर्ष तक संचार का साधन हरकारे या घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार के प्रचलन से बहुत बदलाव आया। तार का आविष्कार रेलों कों भी पीछे धकेल दिया और तीव्र गति से संवाद पहुँचाने का कार्य किया। अब टेलीफ़ोन, वायरलेस, और आगे रडार दुनिया बदलने में सहायक हो रहा है।

(ग) पंत के पत्रों पर छपी पुस्तक का नाम–'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम'।

निराला के लिखे पत्रों पर प्रकाशित पुस्तक का नाम–'हमको लिख्यौ है कहा' है।

दयानंद सरस्वती के द्‌वारा लिखे पत्रों पर प्रकाशित पुस्तक का नाम–'पत्रों के आईने में' है।

इससे यह सिद्‌ध होता है कि पत्रों का महत्त्व और उपयोगिता बहुत अधिक है। पत्र समाचार भेजने का ही साधन नहीं हैं, समाज में सामाजिक शिक्षक की भूमिका भी निभाते हैं।

(घ) संचार के आधुनिक साधनों के समुन्नत होने पर भी पत्रों की उपयोगिता आज भी बरकरार है और बुद्‌धिजीवी वर्ग के लिए, न्यायालयीन क्षेत्र में विधिक सेवाओं में इसका महत्त्व कभी भी कम होने वाला नहीं है। पत्र स्थायी दस्तावेज हैं जो समाज के शिक्षक के रूप में काम करते ही हैं, ये न्यायालय के क्षेत्र में स्थायी साक्ष्य का काम करते हैं इसीलिए पत्र-लेखन कला कभी ह्रासोन्मुख होना संभव नहीं है।

(ङ) यदि उस समय भी आज की भाँति संचार प्रणाली इतनी समुन्नत होती तो संभवत: नेहरू की प्रेरणादायक बातों से हमें वंचित रहना पड़ता क्योंकि नेहरू जैसे व्यस्त व्यक्ति को शायद पत्र लिखने के लिए इतना समय न मिलता। उस समय आमतौर पर पत्र-लेखन विवशता थी। परंतु नेहरू एक श्रेष्ठ साहित्यकार भी थे। इस दृष्टिकोण से पत्र-लेखन अवश्य करते जैसा कि उन्होंने किया। प्रेरणापरक बातें सर्वजन के लिए पत्र द्‌वारा ही संभव है।

(च) पंडित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधी द्‌वारा रवींद्रनाथ टैगोर को लिखे गए पत्र बहुत प्रेरणादायक थे। इन पत्रों का संग्रह 'महात्मा और कवि' नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें महात्मा गांधी और टैगोर के बीच सन 1915 से 1941 के बीच पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें बहुत से नए तथ्य और उनकी मनोदशा का लेखा उपलब्ध है।

(छ) महात्मा गांधी के पास देश-विदेश से आने वाले पत्र पर पता के रूप में महात्मा गांधी इंडिया लिखा आता था और गांधी जी जहाँ होते थे वहाँ पहुँच जाता था। महात्मा गांधी आने वाले पत्रों का जवाब तुरंत लिखते थे। यदि उनका दायाँ हाथ लिखते-लिखते थक जाता था तो वे बाएँ हाथ से पत्र लिखना शुरू कर देते थे।

(ज) बड़े-बड़े लेखकों, पत्रकारों, उद्यमियों, कवि, प्रकाशक, संन्यासी या किसान-इनके द्वारा लिखित पत्र-रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। यह रचनाएँ तत्कालीन समाज, शासन, संस्कृति का प्रतिबिम्ब हैं जो अनुसंधान, प्रेरणा, सीख प्राप्त करने का सशक्त माध्यम हैं। इन पत्रों पर आधारित रचनाओं के द्वारा हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, बहुत कुछ सुधार सकते हैं।

(झ) पत्र-संस्कृति को विकसित करने के लिए पत्र-लेखन को स्कूली पाठ्यक्रम में विषय के रूप में सम्मिलित किया गया। विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से पत्र-लेखन को बढ़ावा देने के लिए 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए सन 1972 से पत्र-लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला शुरू किया।

6. (क) संग्रहालय (ख) महात्मा (ग) संचार (घ) रजनीश (ङ) भावार्थ

(च) सत्याग्रह

7. (क) विद्या + आलय = विद्यालय (ख) देव + आलय = देवालय

(ग) शस्त्र + आलय = शस्त्रालय (घ) हिम + आलय = हिमालय

(ङ) पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

8.

	विग्रह	**समास**
(क)	देश और दुनिया	द्वंद्व समास
(ख)	महान् आत्मा	कर्मधारय तत्पुरुष
(ग)	डाक का घर	तत्पुरुष
(घ)	अर्थ की व्यवस्था	संबंध तत्पुरुष
(ङ)	राष्ट्र का पिता	तत्पुरुष

9. अंकुरित, शीतित, पुष्पित, फलित, रक्षित, इत्यादि।

10. प्रिय मित्र, अनुज

सप्रेम नमस्ते

दिनांक– xx/xx/2019

दिल्ली

मित्र! हम यहाँ सपरिवार कुशल हैं। आशा है तुम भी सपरिवार कुशल होगे। आदरणीय चाचा जी व चाची जी को प्रणाम कहना। दीदी को नमस्ते कहना। मित्र! मैं अभी-अभी तीन मित्रों के साथ वैष्णो देवी की यात्रा पर गया था। एक ऐसी अविस्मणीय घटना घटी जिसे यादकर हृदय काँप उठता है। मित्र, हम तीनों मित्र वैष्णो माता के दर्शन करने के बाद भैरो दर्शन के लिए गए। भैरों जी के स्थान पर एक बड़ा चबूतरा बना है। उस चबूतरे को चारों ओर से ग्रिल से घेर दिया गया है जिससे दूसरी तरफ़ कोई गिर न सके क्योंकि उसके नीचे 3-4 सौ फुट गहरी खाई है। एक बच्चा वहीं खेल रहा था। खेलते-खेलते वह ग्रिल पर चढ़ गया। एकाएक बच्चे की माँ के चीख निकल गई। चीख सुन वह बच्चा घबरा गया और उसका एक हाथ छूट गया। बच्चा खाई की तरफ़ लिपट गया। उसका दूसरा हाथ छूटता कि हमारे एक मित्र ने झपटकर उसका ग्रिल पर टिका हाथ पकड़ लिया। मित्र यदि 20 सेकंड की देर हो गई होती तो वह बच्चा बहुत नीचे जा गिरता। माँ वैष्णो की कृपा और मित्र की फुर्ती से बच्चे के प्राण बच गए। मित्र यह घटना जब मानस पटल पर आ जाता है तो शरीर रोमांचित हो उठता है।

मित्र और सब ठीक है। पढ़ाई अच्छी तरह चल रही है। पत्रोत्तर शीघ्र देना। पढ़ाई मन लगाकर करना है। शेष पत्रोत्तर में–

तुम्हारा मित्र

क ख ग

दिल्ली

11. पक्षियों द्वारा भेजे गए पत्र बहुत संक्षिप्त होते थे। जैसे आजकल तार में बहुत संक्षिप्त सूचना भेजी जाती है। इस प्रकार के पत्र किसी को आकस्मिक बुलाने के लिए, सावधान करने के लिए या खुशी-दुख के संदेश भेजने के लिए पक्षियों को संदेशवाहक के रूप में भेजा जाता था। इसके लिए पक्षियों को प्रशिक्षित किया जाता है। आज के नवीन परिवेश में पक्षियों को संदेशवाहक बनाने का चलन नहीं है।

अध्याय-6

भगवान के डाकिए

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) पक्षियों और बादलों को।
   (ख) एक महादेश से दूसरे महादेश तक।
   (ग) भगवान के डाकिये द्वारा लाई गई चिट्ठियाँ पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ते हैं।
   (घ) 'भगवान के डाकिए' कविता के रचयिता रामधारी सिंह दिनकर हैं।
   (ङ) पक्षियों के पाँखों पर।
   (च) खग, पखेरू, आकाशचारी

3. (क) इस कविता के माध्यम से कवि ने मनुष्य को एक संदेश दिया है कि जब हमारी प्रकृति निष्पक्ष है तो हममें आपस में द्वेष-वैमनस्यता क्यों है। इसे व्यक्त करने के लिए कवि ने बादल और पक्षी को माध्यम बनाया है। बादल एक देश का पानी भाप के रूप में ले जाकर दूसरे देश में जल के रूप में पेड़-पौधों, पृथ्वी की प्यास बुझाते हैं, पक्षी एक देश की सौरभ अपने पंखों पर लेकर दूसरे देश में फैलाते हैं और बादलों और पक्षियों की यह भाषा पेड़-पौधे, धरती, प्रकृति समझ लेती है तो मनुष्य सबसे प्रज्ञावान होने पर भी इस प्रेम संदेश को क्यों नहीं समझ पाता।
   (ख) प्रस्तुत काव्यांश में कवि रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं कि हम मनुष्यों ने अपने-अपने देश की सीमा बाँध रखी है परंतु प्राकृतिक उपादान किसी भी बंधन को न स्वीकार कर एक देश की धरती की सुगंध पक्षी अपने पंखों पर धारण कर दूसरे देश में बिखेर आते हैं बिना किसी भेद-भाव के। कवि देखता है कि कहीं जल बँटवारे का झगड़ा है तो कहीं सीमा विवाद। सब मनुष्य ने अपने से बना डाले हैं। प्रकृति और पशु-पक्षी में यह भेद-भाव नहीं है। बादल एक देश से वाष्प के रूप में जल ले जाकर बिना भेद-भाव के दूसरे देश में बरस जाते हैं।

4. (क) (iv) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (ii) (ङ) (iv)

5. (क) कविता में प्रकृति के विभिन्न रूपों को निम्नलिखित मानवीय क्रियाएँ करते हुए दर्शाया गया है। कवि ने पक्षियों और बादलों को डाकिया के रूप में मानवीकरण किया है जो वाष्प और सौरभ के रूप में एक देश का मैत्री संदेश दूसरे देश को ले जाते हैं परंतु हम मनुष्य उनकी भाषा नहीं समझ पाते परंतु उनके द्वारा लाई गई चिट्ठियाँ रूप संदेश पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ बाँचते हैं और स्वीकार करते हैं।
   (ख) पक्षी और बादल ऐसे डाकिए हैं जो केवल प्रेम और मैत्री का ही संदेश लेकर आते हैं वाष्प और सुगंध के रूप में और दूसरे देश में जल के रूप में गिरते हैं बिना किसी भेद-भाव के। जबकि वास्तविक डाकिए राग-द्वेष, वैमनस्यता का संदेश भी लाते हैं। लेखक मनुष्य जाति को यही संदेश देता है कि जब प्रकृति के डाकिए बिना भेद-भाव के एक देश की वाष्प को ले आकर दूसरे देश में जल के रूप में वर्षा करते हैं तो मनुष्य तो एक बौद्धिक प्राणी है। वह अपने को सीमाओं में समेट रखा है।
   (ग) 'भगवान के डाकिए' कविता के माध्यम से कवि ने विश्व बंधुत्व का संदेश दिया है। कवि कहता है कि पक्षी और बादल एक देश की धरती की सुगंध और पानी को वाष्प के रूप में बादल बनकर दूसरे देश में बिना बाधा के बरस जाते हैं और प्राकृतिक उपादानों पेड़-पौधे, पानी, पहाड़ को हरा-भरा करते हैं तो मनुष्य बौद्धिक होकर भी इतना संकीर्ण भला क्यों है?
   (घ) 'भगवान के डाकिए' कविता में कवि ने मनुष्य को विश्व बंधुत्व का संदेश दिया है। कवि ने इस संदेश को मनुष्य तक पहुँचाने के लिए प्रकृति के विभिन्न रूपों का मानवीकरण करते हुए माध्यम बनाया है। कवि कहता है कि जब एक देश

की धरती दूसरे देश को प्यार और सौहार्द रूपी सुगंध को बिना भेद-भाव के भेजती है तो मनुष्य अपने राज्यों, देशों की सीमाओं में क्यों बाँध लिया है? ईश्वर संपूर्ण विश्व को एक मानकर अपना प्यार बराबर रूप में बाँटते हैं तो मनुष्य क्यों संकीर्ण विचारधारा का हो गया है?

(ङ) पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान के डाकिए की चिट्ठियाँ पढ़ने में इसलिए सक्षम हैं कि वे पूर्णरूप से उनके द्वारा लाए गए संदेश-शीतलता, सुगंध को बिना बाधा के ग्रहण कर लेते हैं। बादल और पक्षी की कोई सीमा नहीं है। ये एक देश से दूसरे देश को बिना बाधा के जाते हैं, वहाँ से वाष्प के रूप में जल लाकर दूसरे देश में वर्षा करते हैं। पेड़-पौधे, पर्वत-पहाड़ उनके इस सौहार्द को समझ लेते हैं परंतु मनुष्य नहीं समझ पाता।

6. (क) बादल और पक्षी एक **महादेश** से दूसरे महादेश को आते-जाते हैं।

(ख) डाकिया संदेशवाहक होता है।

(ग) पक्षियों द्वारा दूर देश से लाई गई सुगंध सर्वत्र फैल जाती है।

(घ) भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा पहाड़ है।

7. पक्षी बादल चिट्ठियाँ

पहाड़ देश सुगंध

8. (क) जल, वारि (ख) पर्वत, पाषाण (ग) खग, पखेरू (घ) सौरभ, खूशबू (ङ) पृथ्वी, धरा

(च) मेघ, बारिश (छ) वायु, अनिल (ज) मानव, आदमी

9. महादेश महामृत्युंजय

महामानव महा शब्दकोश

महाशिवरात्रि महाभारत

10. आज से एक-डेढ़ दशक पूर्व हमारे जीवन में डाकिया महत्त्वपूर्ण ही नहीं था, बल्कि डाकिया जीवन की आवश्यकता थे। संचार के नए साधनों के विकसित हो जाने से डाकिया जीवन की आवश्यकता से घटकर महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। आज भी डाकिए का महत्त्व है। डाक-विभाग सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था है अतः डाक विभाग के माध्यम से प्राप्त पत्रों आदि की विधिक महत्ता है इसलिए डाकिए सदैव महत्त्वपूर्ण होते हैं। इनकी कार्य-शैली में आधुनिकता ने स्थान ले लिया है।

11. प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत प्रगाढ़ संबंध है। बिना प्रकृति के मनुष्य का अस्तित्व ही नगण्य है। प्रकृति मनुष्य का जीवनाधार है। जब-जब मनुष्य प्रकृति से मनमानी करने पर उतारू होता है, उसे प्रकृति का विकराल रूप देखना पड़ता है। परंतु प्रकृति मनुष्य को अपने विकराल रूप प्रस्तुत कर डराती नहीं। केवल यह संदेश देती है मैत्री का कि जब प्रकृति और मनुष्य मित्र बनकर रहेंगे तो उसका सबसे बड़ा लाभ मनुष्य का ही है और प्रकृति भी हरी-भरी रहकर उसे कुछ देती है।

अध्याय-7

क्या निराश हुआ जाए

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

(च) ✓

2. (क) लेखक ने दस रुपए के स्थान पर टिकट के लिए रु०100 का नोट देने की भूल की।

(ख) समाचार-पत्र चोरी, ठगी, डकैती, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों से भरे रहते हैं।

(ग) ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जा रहा है।

(घ) अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं।

(ङ) मनुष्य में लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं।

(च) इस पाठ में लेखक के दृष्टिकोण में भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

(छ) प्रत्येक आदमी में आज दोष देखा जाने लगा है, उसकी अच्छाई या गुणों को नहीं। यह स्थिति चिंताजनक है।

(ज) कंडक्टर थोड़ी देर बाद एक खाली नई बस लेकर आया और लेखक के बच्चों के लिए दूध और एक लोटा पानी लेकर आया।

(झ) नहीं। लेखक के समझाने-बुझाने पर लोगों ने मारा-पीटा नहीं परंतु उसे घेरकर रखा कि वह भाग न जाए।

3. (क) तिलक और गांधी के सपनों का भारत एक भ्रष्टाचार मुक्त, ईमानदार और मानवतावाद का पोषक भारत था। परंतु सब कुछ उलटा ही हो रहा है। आज सर्वत्र आरोप-प्रत्यारोप का ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में अब कोई ईमानदार रह ही नहीं गया है। आज जो जितने ऊँचे पद पर है, उसमें उतने ही बड़े दोष आँके जाते हैं। लगता है, भारतवर्ष से ईमानदारी, मानवता, सद्भावना, सद्विचार लुप्त हो गए हैं।

(ख) एक समय में भारत में कानून को भी धर्म के रूप में माना जाता रहा है परंतु आज कानून को धर्म से अंतर कर दिया गया है। आज के अनुसार धर्म धोखे का विषय नहीं हो सकता परंतु कानून को धोखा दिया जा सकता। इसीलिए आज धर्मभीरु लोग भी जो धर्म का आदर करते हैं, वे भी कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में नहीं हिचकते।

4. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii) (घ) (ii) (ङ) (ii)

5. (क) बस के गंतव्य से आठ किलोमीटर पहले ही रुक जाने से, वह भी रात के समय में, यात्री भयभीत थे। कुछ यात्रियों ने यह भी बताया कि यह स्थान बस डकैती के लिए प्रसिद्ध है। इससे लोग और भयभीत हो गए। बस के रुकते ही बस कंडक्टर उतरकर साइकिल लेकर कहीं चला गया। इससे लोगों को भय हुआ कि कंडक्टर डाकुओं को सूचना देने गया है। इसीलिए ड्राइवर को मारने पर उतारू थे।

(ख) भारतवर्ष प्राचीन काल से ही अध्यात्मवादी देश रहा है। यहाँ भौतिक वस्तुओं के संग्रह को महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। अध्यात्मवादी होने से लोगों में संतोष की प्रवृत्ति अधिक थी। इस कारण मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है वही चरम और परम है। इसका कारण है भौतिकवाद अस्थायी और भ्रम उत्पन्न करने वाला है।

(ग) यद्यपि लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, परंतु उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उनका गुलाम बनाकर उनके इशारे चलने लगना बुरा आचरण है। इसे भारतवर्ष में कभी भी उचित और नीति-सम्मत नहीं माना गया है।

(घ) आज मानवीय मूल्यों के प्रति लोगों में आस्था कम होने का कारण है-परिश्रम और ईमानदारी की अवमानना। आज ईमानदारी से परिश्रमपूर्वक काम करके अपनी आजीविका चलाने वाला भोला-भाला आदमी दो जून की रोटी के लिए मोहताज है और झूठ और फरेब कर रोजगार करने वाला व्यक्ति तेज़ी से फल-फूल रहा है। आज ईमानदारी को मूर्खता का पर्यायवाची समझा जा रहा है। सच्चाई अब भयभीत और बेबस लोगों के लिए बची है।

(ङ) यद्यपि सरकार ने देश के करोड़ों गरीबों, अभावग्रस्त लोगों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की हैं, अनेक कायदे-कानून बनाए हैं, जिससे कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाया जा सके, उन्हें समुन्नत किया जा सके परंतु इस काम में जिन लोगों को लगना है, प्रत्येक समय उनका मन पवित्र नहीं रहता। वे अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं और अपना पॉकेट भरने में लग जाते हैं।

(च) बस कंडक्टर बस खराब हो जाने पर तुरंत साइकिल द्वारा शहर जाकर नई बस लेकर आया। साथ ही लेखक के बच्चों के लिए दूध और पानी लाया। इससे लेखक बस कंडक्टर से बहुत प्रभावित हुआ। लेखक बस कंडक्टर से इसलिए भी प्रभावित हुआ कि कंडक्टर ने यात्रियों के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा और ज़िम्मेदारी का परिचय दिया।

(छ) कवीन्द्र रवींद्र नाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से यही प्रार्थना की है हे प्रभु! यदि हमें संसार में रहकर केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर मुझे ऐसी शक्ति देना कि मेरे मन में तुम्हारे प्रति संदेह न उत्पन्न हो।

(ज) लेखक टिकट बाबू की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से प्रभावित हुआ। हुआ यह कि एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते समय गलती से दस रुपए के नोट की जगह पर 100/- का नोट दे दिया और जल्दी में आकर गाड़ी में बैठ गया। थोड़ी देर बाद टिकट बाबू सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ लेखक के पास पहुँचा, उन्हें पहचानकर बड़ी विनम्रता से लेखक के हाथ में नब्बे रुपए रख दिए। लेखक उनकी सज्जनता और ईमानदारी से प्रभावित हुआ।

(झ) लेखक के बच्चे भूख और प्यास से व्याकुल थे। लेखक और उनकी सहधर्मिणी का भय से बुरा हाल था। बस को रुके हुए डेढ़-दो घंटे हो गए थे यहाँ से जाने का कोई उपाय नहीं था।

6. (क) मनीषी (ख) स्वास्थ्य (ग) आक्रोश (घ) स्वाभाविक
(ङ) भीरु (च) निकृष्ट (छ) आध्यात्मिकता (ज) संस्कृति

7. आरोप-प्रत्यारोप लोभ-मोह सुख-सुविधा दया-माया
संस्कृति-सभ्य काम-क्रोध कायदे-कानून मार-पीट

8. (क) भारतीय (ख) प्रामाणिक (ग) संकोचशील (घ) ऊपरी
(ङ) यूरोपीय (च) दोषी

9. मेरे जीवन में एक सच्ची घटना घटी है जिसने यह सिद्ध कर दिया कि दुनिया में अभी भी ईमानदारी है। हुआ यह कि मैं सिंडीकेट बैंक, शाखा, सेक्टर-5, गाजियाबाद में चेक डालने गया। मैंने वहाँ पर अपनी पासबुक और मोबाइल फ़ोन टेबल पर रखकर चेक जमा करने वाला फार्म भरने लगा। फार्म भरकर मैंने चेक चेकबाक्स में डाल दिया और पासबुक और मोबाइल वहीं टेबल पर छोड़ कर चला गया। जब मुझे याद आया तब बहुत देर हो चुकी थी। मोबाइल फ़ोन मंहगा था। मैंने सोचा, वहाँ जाना बेकार है। कोई उठा लिया होगा। अब वापस मिलना संभव नहीं है। परंतु किसी सज्जन व्यक्ति ने वह फ़ोन गार्ड को दिया। गार्ड ने वह फ़ोन काउंटर पर एक मैडम को दिया। मैडम ने एकाउंट से जुड़े फ़ोन नंबर पर सूचित किया। उस दिन हमें लगा, ईमानदारी देश में जिंदा है।

10. हमारे सपनों का भारत पूर्ण रूप से समुन्नत, भ्रष्टाचार से मुक्त, ईमानदार, मानवतावादी भारत है जिसमें भेदभाव के लिए कोई स्थान न हो। जहाँ गरीब-अमीर, ऊँच-नीच का अंतर न हो। सभी लोग समान हों। सबमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सद्व्यवहार की भावना हो। हमारा लक्ष्य राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाना हो। सभी लोग अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें। अपनी नैतिकता को संवर्धित करने के लिए अपने-अपने धर्म का अनुशीलन करें परंतु दूसरे के धर्म से नफ़रत या घृणा न करें। देश में अमन-चैन हो। हम सब भारतीय एक हों।

अध्याय-8

यह सबसे कठिन समय नहीं

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗
(च) ✓

2. (क) चिड़िया की चोंच में तिनका है।
(ख) चिड़िया उड़ने की तैयारी में है।
(ग) बूढ़ी नानी सदियों से कथा सुना रही है।
(घ) रात होने का संकेत दे रहा है।
(ङ) बचे हुए लोगों का।
(च) स्टेशन पर भारी भीड़ है।
(छ) कविता में कोई किसी की प्रतीक्षा कर रहा होगा।
(ज) यह सबसे कठिन समय नहीं है।
(झ) रेलगाड़ी गंतव्य तक जाती है।

3. (क) प्रस्तुत कविता 'अभी कठिन समय नहीं है' कवयित्री की आशावादी कविता है। उनको आशा है जब तक सब काम सामान्य रूप से चल रहा है, कहीं से कोई बाधा या निराशा नहीं है तब तक कठिन समय नहीं है। यात्री स्टेशन पर भीड़ बनाए हुए हैं, रेलगाड़ी अभी भी चल रही है, यात्रियों को गंतव्य पर पहुँचने के लिए जहाँ कोई प्रतीक्षा कर रहा है, और कहता

है जल्दी आ जाओ, सूरज डूबने का वक्त हो गया। इस प्रकार आज भी कोई प्रतीक्षा करने वाला है। जब तक यह कार्य अनवरत चलते रहेंगे तब तक अभी बुरा वक्त नहीं आया है।

(ख) कवयित्री कह रही है कि अभी भी दादी-नानी सदियों से सुनाई जाने वाली कहानियाँ सुनाती हुई नई पीढ़ी का चरित्र-निर्माण कर रही हैं और बता रही हैं दूसरे ग्रहों की कहानियाँ सुना रही और बता रही हैं कि दूसरे ग्रहों से समाचार लाएंगे बचे हुए लोगों की। अभी सारे काम पूर्ववत चल रहे हैं तब तक यह नहीं मानना चाहिए कि कठिन समय आ गया है।

4. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

(ङ) (i) (च) (iv)

5. (क) कवयित्री चोंच में तिनका दबाए चिड़िया के माध्यम से यह संदेश देना चाहती है कि अभी यह सबसे कठिन समय नहीं है क्योंकि प्रकृति के सारे कार्य यथावत चल रहे हैं। मनुष्य भी अपने सारे कार्य पहले की भाँति कर रहा है। कहीं कोई रुकावट या बाधा नहीं है। आज भी चिड़िया तिनके से अपना नीड़ बनाने में लगी है, उड़ने की तैयारी में है, अभी भी स्टेशन से गाड़ी यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाने के लिए चल रही है। सारे कार्य पहले की भाँति चल रहे हैं, फिर अभी कठिन समय कैसे कहा जा सकता है।

(ख) सूर्यास्त होने तक घर से बाहर गए आत्मीय और परिवार के लोग नहीं आ जाते, तो परिवार के लोग चिंतित हो जाते हैं। कवयित्री इन पंक्तियों के माध्यम से सामाजिक विषमताओं को बताते हुए कह रही हैं कि जैसे पहले अराजकता थी और शाम होते ही लोग अपने प्रियजन के घर न पहुँचने पर चिंतित हो जाते थे, वैसे ही सब कुछ आज भी चल रहा है। कहीं कोई अंतर नहीं है फिर कैसे कहा जा सकता है कि कठिन समय आ गया है।

(ग) कवयित्री के अनुसार, बूढ़ी नानी सदियों से यह कथा सुनाती आ रही हैं कि सितारों की दुनिया से एक बस आएगी और बचे हुए लोगों का समाचार लाएगी। इस तरह सारा कार्य पहले की भाँति हो रहा है, दादी-नानी बच्चों को प्रेरणास्पद कहानियाँ सुनाती हुई बताती हैं कि इस लोक के अतिरिक्त अंतरिक्ष में भी एक लोक है जहाँ से बस के द्वारा समाचार आएंगे।

(घ) 'यह सबसे कठिन समय नहीं है' के माध्यम से कवयित्री ने संदेश दिया है कि सभी प्राकृतिक और मानवीय कार्य यथावत और पूर्ववत हो रहे हैं। अभी ऐसा कोई बदलाव न तो प्रकृति में और न मनुष्य में दिखाई पड़ रहा है जिससे यह समझा जाए कि कठिन समय आ गया है या आने वाला है। सामाजिक व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है, प्राकृतिक व्यवस्था भी यथावत चल रही है। अत: हमें घबराना नहीं चाहिए। अभी समय कठिन नहीं है।

(ङ) मनुष्य को आशावादी बने रहने के लिए कवयित्री ने चिड़ियों के विषय में बताया कि वे आज भी अपने नीड़-निर्माण के लिए मुँह में तिनका दबाए उड़ने को तैयार हैं, आज भी स्टेशन पर भारी भीड़ है, रेलगाड़ी पथिकों को गंतव्य पर पहुँचाने के लिए निरंतर चल रही है। आज भी लोग शाम होता देख अपने प्रियजन के लिए चिंतित हैं, बूढ़ी नानी आज भी बच्चों को एक दूसरे लोक की बात करते हुए बच्चों को अंतरिक्ष से समाचार आने की कहानी सुना रही है। सब कुछ तो पूर्ववत चल रहा है, फिर कैसे कहा जा सकता है, कठिन समय आ गया है।

(च) 'यह सबसे कठिन समय नहीं' का प्रतिपाद्य है, आशावादी दृष्टिकोण को अपनाना। मन में निराशा न उत्पन्न होने देना क्योंकि अभी ऐसी कोई स्थिति नहीं दिखाई देती जिससे यह प्रतीत हो कि कठिन समय आ गया है। सब कुछ तो पहले जैसा ही चल रहा है, जैसा सदियों पूर्व हो रहा था। अत: निराशा का कोई कारण नहीं है।

(छ) प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने आशावादी बनाने के लिए वास्तविक और सत्यपरक तथ्यों के साथ-साथ काल्पनिकता का भी आश्रय लिया है। उन्होंने अंतरिक्ष के पार की दुनिया की बात काल्पनिकता के आधार पर कही है। यह बूढ़ी नानी अपने काल्पनिकता के आधार पर सदियों से कहती आ रही है।

6. (i) सबसे कठिन समय – स की आवृति

(ii) अभी भी भीड़ – भी की आवृति

(iii) कहता है कोई किसी को – 'क' की आवृत्ति

(iv) यह सबसे कठिन समय नहीं – 'स' की आवृति

7. सूरज	–	पुल्लिग	खबर	–	स्त्रीलिंग
चिड़िया	–	स्त्रीलिंग	समय	–	पुल्लिग
कथा	–	स्त्रीलिंग	प्रतीक्षा	–	स्त्रीलिंग
तिनका	–	पुल्लिग	पत्ती	–	स्त्रीलिंग

8. (i) अब रमेश के **पर** निकल आए हैं।

यमुना के उस **पार** शाहदरा क्षेत्र है।

(ii) हमने सुना है कि दिल्ली में बाढ़ आ गई है।

आज मम्मी के चले जाने से घर सूना-सूना लग रहा है।

(iii) घर के ढह जाने से घर का सामान मलबे के नीचे दबा है।

क्या रामरतन को दवा दे दी गई?

(iv) यह बस अलीगढ़ जा रही है।

एवरेस्ट पर चढ़ाई करना हमारे वश में नहीं है।

10. हम कवयित्री के दृष्टिकोण से पूर्ण सहमत हैं। प्रत्येक व्यक्ति को आशावादी होना ही चाहिए। आशावादी व्यक्ति कठिनाई की ओर ध्यान ही नहीं देता। उसे केवल अपना लक्ष्य दिखाई देता है। लक्ष्य साधने में यदि कोई कठिनाई आती भी है तो वह उसका साहसपूर्वक सामना करते हुए आगे बढ़ जाता है। प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने कहा है कि प्रकृति अपने पूर्ववत स्थिति में है, मनुष्यकृत सारे कार्य यथावत चल रहे हैं, कहीं कोई बदलाव या परिवर्तन नहीं है फिर कैसे यह कहा जाए कि यह सबसे कठिन समय है। और इससे बढ़िया समय कब था? इस प्रकार का उदाहरण देकर जैसा कि कवयित्री ने दिया है, कविता में, उन्होंने एक स्फूर्तिजनक ऊर्जा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

अध्याय-9

कबीर की साखियाँ

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✓

2. (क) साधु का ज्ञान पूछना चाहिए।

(ख) जिसका मन शीतल होता है उसका जग में कोई बैरी नहीं होता।

(ग) अपशब्द का जवाब अपशब्द में देना, अपशब्दों की श्रृंखला बन जाता है।

(घ) माला कार में फेरना दिखावे की भक्ति है।

(ङ) हमें पैर के नीचे रहने वाले तिनके को भी छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि वह छोटा तिनका आँखों में पड़ जाने पर बहुत शक्तिशाली प्रतीत होने लगता है, बहुत दुख देता है।

(च) कबीर तिनके की निंदा करने के लिए मना करते हैं।

(छ) आपा (अहंकार) त्याग देने पर मनुष्य पर सबकी कृपा, दया मिलने लगती है।

(ज) मनुष्य के व्यवहार में दूसरों को शत्रु बना लेने वाले शेष होते हैं।

(झ) म्यान तो केवल तलवार को रखने का पात्र है, काटने का काम तो तलवार ही करती है।

3. (क) उपर्युक्त दोहे में कवि कबीर ने मनुष्य के ढोंग और आडंबर को बताते हुए कहा है कि हाथ में माला लेकर जाप कर रहे हैं, हाथ की उँगलियाँ माला के मनके पर चल रही हैं और मुख में जिह्वा पर कुछ और बात चल रही है, अंतरमन विचारों के झंझावात में न जाने क्या फितरत की बातें सोच रहा है। इस प्रकार के ईश्वर के सुमिरन को सुमिरन न कह ढोंग कहा जाता है। शुद्ध सुमिरन में तो मन, वाणी और माला तीनों से एक ही बात आनी चाहिए-ईश्वर नाम।

(ख) कवि कहते हैं कि यदि हमारा चित्त शांत है, मन में किसी प्रकार की उग्रता नहीं है, मन पूरी तरह से शीतल है तो संसार

में हमें कोई अपना शत्रु नहीं प्रतीत होगा। जब मनुष्य के मन से अहंकार तिरोहित हो जाता है तो उस पर सभी लोग प्रेम और दया की बरसात करने लगते हैं।

4. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (ii)

5. (क) कवि कबीर दास यह संदेश देना चाहते हैं कि एक सच्चे साधु की कोई जाति नहीं होती। वह इस सबसे ऊपर उठकर ही साधु बनता है। साधु एक ज्ञानी, प्रज्ञावान व्यक्ति होता है। साधु से ज्ञान की बातें पूछनी चाहिए। जाति म्यान की तरह है जो केवल तलवार रखने के काम आती है। काम तो काटने का तलवार ही करती है, फिर म्यान की जानकारी के लिए क्यों समय व्यस्त करना।

(ख) कवि कबीर ने इस दोहे के माध्यम से बताया है कि जब आपको कोई गाली दे तो उसका प्रतिउत्तर कभी गाली से नहीं देना चाहिए। अपशब्दों की श्रृंखला बन जाती है गाली का जवाब गाली से देने में, और यदि अपशब्द को सुनकर उसे मन से निकाल देने पर वह एक ही रह जाती है।

(ग) कवि कहते हैं कि मूल्य और उपयोगिता तलवार की होती है। म्यान तो केवल तलवार रखने के लिए होती है। इसलिए मूल्य तलवार का किया जाता है। ठीक इसी तरह साधु की पहचान उसके ज्ञान से होती है न कि उसकी जाति से।

(घ) आडंबरपूर्ण भक्ति को कवि सच्ची भक्ति नहीं मानता। आडंबरपूर्ण भक्ति वह भक्ति है जिसमें भक्त की अँगुलियाँ माले के मनकों पर चल रही हैं, जिह्वा कुछ और कह रही हैं और मन कुछ और सोच रहा है। इस प्रकार की भक्ति को कवि सच्ची भक्ति नहीं मानता।

(ङ) कवि किसी को कमज़ोर, हेय और छोटा समझने की सीख नहीं देता। मनुष्य को एक तिनके की भी कद्र करनी चाहिए क्योंकि पैर के नीचे रहने वाली घास का एक तिनका जब आँखों में गिर जाता है तो वह बहुत शक्तिशाली प्रतीत होता है।

(च) 'कबीर की साखियाँ' पाठ में कबीर ने मनुष्य की प्रवृत्तियों को बताने का कार्य किया है। इसके साथ ही मनुष्य के सत्य स्वरूप को उजागर करने का प्रयत्न किया है। कवि ने सज्जन पुरुष के ज्ञान को महत्त्व देने का संदेश दिया है उनकी जाति को नहीं। इसी तरह किसी को छोटा और बड़ा, किसी को कमज़ोर न समझने को कहा है क्योंकि पैरों के नीचे पड़ा तिनका आँख में पड़ जाने पर बहुत शक्तिशाली बन जाता है। कबीर ने आडंबरपूर्ण भक्ति को महत्त्व न देकर सच्चे और एकाग्र मन से की गई भक्ति को महत्त्वपूर्ण कहा है। अपना चित्त शीतल और शांत होने पर कोई बैरी नहीं होता।

(छ) आपा का अर्थ है अहंकार, घमंड। आत्मविश्वास अपने मन पर विश्वास को कहते हैं। इस प्रकार घमंड और आत्मविश्वास में बहुत अंतर होता है। घमंड पतनोन्मुख होता है, आत्मविश्वास उन्नतिपरक। इसी तरह घमंड या आपा तथा उत्साह में भी अंतर है। उत्साह का अर्थ है प्रसन्नता, कुछ कर गुजरने का सामर्थ्य।

6. ग्यान–ज्ञान जीभि–जीभ, जिह्वा गारी–गाली मनुवाँ–मन

दिसि–दिशा पाऊँ–प्राप्त, करूँ नींदिए–नींद आँखि–आँखें

सीतल–शीतल नाहिं–नहीं

7. (क) मालाएँ (ख) आँखें (ग) जातियाँ (घ) तलवारें

(ङ) जानकारियाँ (च) दिशाएँ

8. (क) अक्षि (ख) मुख (ग) स्मरण (घ) हस्त

9. कबीर के दोहे सत्य आधारित हैं इसलिए शाश्वत हैं। इनकी प्रासंगिकता कभी भी समाप्त होने वाली नहीं है। आज से पाँच शताब्दी पूर्व लिखी कबीर की वाणी आज भी उतनी सार्थक और सजीव है जितनी की उस समय रही होगी। यह सत्य है कि साधु और सज्जन पुरुष की जाति नहीं पूछी जाती, उसका ज्ञान महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है। इसी तरह अपशब्द या गाली है। आदमी किसी को गाली देगा तो प्रतिउत्तर में गाली पाएगा और वह एक से अनेक बन जाएगी परंतु प्रतिउत्तर न देने पर वह एक ही रह जाएगी। इस सत्य को कैसे नकारा जा सकता है। उसी तरह जप करते समय चित्त कहीं और हो, जिह्वा से उच्चारण कुछ हो तो इस भक्ति से क्या लाभ। किसी को कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। एक छोटा तिनका आँखों में पड़ने पर बहुत पीड़ादायक हो जाता है। यह सत्य है।

10. विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से करें।

अध्याय-10

कामचोर

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
   (च) ✓ (छ) ✓

2. (क) नल पर सब एक साथ टूट पड़े। वहाँ भी घमासान मची। किसी को एक बूंद पानी नहीं मिला।
   (ख) भेड़ें शिकारी कुत्ते की तरह गंध सूँघती हुई हमला करती गईं।
   (ग) अब्बा मियाँ ने काम न करने वालों को रात का खाना न देने की सजा सुनाई।
   (घ) अंत में बच्चों ने काम करने का निश्चय किया।
   (ङ) मुर्गी के मोरी पर फिसलने के कारण मोरी का कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ा।
   (च) हज्जन माँ एक पलंग पर दुपट्टे से मुँह ढाँके सो रही थीं।
   (छ) दिनभर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर उसपर झपटीं।
   (च) सारा घर दरी झाड़ने से निकली धूल से अट गया।
   (छ) बालटी को लात भैंस ने मारी।

3. (क) अम्मा ने यह बात कही कि या तो बच्चा राज कायम कर लो। नहीं तो मैं चली मायके। ऐसा कहना उनका उचित था। जिस घर में ऐसे उद्दंड और कामचोर बच्चे हैं, उस घर में सलीके से रहने वाला व्यक्ति रह ही नहीं सकता। घर में बच्चों की इतनी बड़ी फौज़ परंतु उनपर संस्कार देने वाला, उन्हें नियंत्रित करने वाला कोई नहीं। ऐसे बच्चों के बीच कोई कैसे रह सकता है।
   (ख) बच्चों को कभी काम कराया नहीं गया, काम करने का सलीका, अनुशासन, नियंत्रण किया नहीं गया, बच्चों में अलग-अलग काम का विभाजन किया नहीं गया तो वे जहाँ जिस काम पर एक साथ लगे, उसका विध्वंस कर दिया।

4. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (i) (ङ) (iv)
   (च) (ii)

5. (क) बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद घर के बच्चों से काम लेने के लिए तय किया गया और काम के बदले तनख़्वाह देने का प्रलोभन दिया गया। काम कैसे करेंगे, कौन-कौन क्या-क्या काम करेंगे, ऐसा कुछ भी नहीं बताया गया।
   (ख) अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और कुछ दूसरे कामों का हवाला दिया- माली को तनख़्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें तो .... परंतु अम्मा ने इस बात का विरोध किया और कहा- घर में बाढ़ आ जाएगी। परंतु बच्चे काम करने पर तुले हुए थे।
   (ग) बच्चों का कहना था कि झाड़ू देने से पहले अगर पानी छिड़क लिया जाए तो धूल नहीं उड़ेगी, यह ख़्याल आते ही सारे लड़कों ने मिलकर दरी पर पानी छिड़का। दरी पहले से ही धूल से अटी पड़ी थी, पानी पड़ते ही सारी कीचड़ में बदल गई। वहाँ से भगाए जाने पर सब पेड़ों को पानी देने निकले। नल पर आपस में खूब धींगा-मुश्ती हुई, आपस में मार-पीट, उठा-पटक मची। इस धींगा-मुश्ती में कुछ लड़के कीचड़ में सन गए। अंत में इन्हें नहलाने के लिए चार आने प्रति लड़के की दर से पड़ोस के नौकरों को देने पड़े तब ये साफ़ हो सके।
   (घ) भागती भेड़ों की तुलना शिकारी कुत्तों से की गई है क्योंकि भेड़ें सूप के लिए उसी तरह दौड़ रही थीं जैसे शिकारी कुत्ता अपने शिकार के लिए दौड़ता है। जहाँ-जहाँ सूप गुजरा, भेड़ें निःसंकोच मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को तोड़ती-लांघती हमला करती गईं।
   (ङ) भैंस के दोनों पैर आगे के और दोनों पीछे के बाँध दिए जाएँ और काबू में लाकर दूध निकाल लिया जाय। झूले की रस्सी से भैंस के पिछले दो पैर चाचा जी के चारपाई के पायों से बाँध दिए गए। अगले दोनों पैर बाँधने की कोशिश कर ही रहे थे कि भैंस छूटकर भागी। चाचा जी की चारपाई भी भैंस के पीछे-पीछे बंधी होने के कारण भाग रही थी। लड़कों ने भैंस का बच्चा भी छोड़ दिया। बच्चे की ममता में भैंस रुक गई।

(च) झाड़ू एक ही था। सभी बच्चों को झाड़ू लगाना था। अतः झाड़ू के तिनके-तिनके बिखेर दिए। जिसके हाथ में जितनी सींके आईं, उसी से झाड़ू लगाना शुरू किया। इस प्रकरण से बच्चों की कामचोरी का ही नहीं मंद बुद्धि होने का भी पता चलता है।

(छ) फर्शी दरी को झाड़ने पर उसमें पड़ी धूल से सारा घर भर गया। घर में रहना दूभर हो गया। सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों, नाक, आँख पर जम गई। सबका बुरा हाल हो गया।

(ज) भैंस के बारे में तय हुआ कि इनके आगे और पीछे के पैर रस्सी से बाँध दिए जाए और इन्हें काबू में करके दुहा जाए। लड़कों ने झूले की रस्सी उतार उससे पीछे का पैर बाँध दिया और आगे का पैर बाँधने की कोशिश कर ही रहे थे कि भैंस भड़क गई और भाग खड़ी हुई।

6.

पुनरुक्त शब्द	**योजक शब्द**
अब्बा	वाद-विवाद
उम्मीदवार	हिल-हिलाकर
थक्के	दो-चार
थक्का	खाँसते-खाँसते
	उलटे-सीधे

7. (क) दिन-भर की भूखी भेड़ें दानों पर झपट पड़ीं।

(ख) पानी के मटकों के पास ही समझौता हो गया।

(ग) यह दरी कितनी साफ़ हो गई है।

(घ) पता चला कि प्याले भरे हैं।

(ङ) अम्मा ने अनिश्चय किया।

8. मेरी माँ अकसर अस्वस्थ रहती हैं। बहुत दवा होने पर भी उनके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा है। पापा दूर नौकरी करते हैं। उनकी दिनचर्या बहुत व्यस्त है। सवेरे मम्मी को काम की भीड़ रहती है। मैं सवेरे उठकर सर्वप्रथम अपने स्कूल का काम समाप्त करता हूँ फिर मम्मी की सहायता में जुट जाता हूँ। मैं बर्तन धोने, सब्ज़ी काटने, वाशिंग मशीन से कपड़े धोने में मदद कर देता हूँ। जब मम्मी घर में झाड़ू लगा देती हैं तो मैं जल्दी से मशीन से पोंछे लगा लेता हूँ। तब तक मम्मी पापा के लिए खाना बना देती हैं। मम्मी पापा मुझे बहुत प्यार करते हैं।

9. बड़े होते बच्चे अनेक प्रकार से अपने माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं। माता-पिता के लिए बच्चों का सबसे बड़ा सहयोग है सुयोग्य बनना, सुशील और चरित्रवान बनना। इसके अतिरिक्त घर के कामों में भी सहयोग कर सकते हैं। घर पर यदि खेती है तो बच्चे अपना कुछ समय कृषि कार्य में भी लगा सकते हैं। अपने घर की साफ़-सफ़ाई में भी अपने माता-पिता का सहयोग कर सकते हैं। माँ की सहायता रसोई में भी कर सकते हैं। इन छोटी-मोटी सहायता करने से माता-पिता को प्रसन्नता होती है और बच्चों में भी स्वावलंबन की भावना जन्म लेती है साथ ही बच्चों का चरित्र-निर्माण भी होता है।

अध्याय-11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

(च) ✓

2. (क) हार्मोनियम, वायलिन और तबला वाद्यों का।

(ख) हिंदी-उर्दू के मेल वाली हिंदुस्तानी भाषा को।

(ग) मूक फिल्मों में अभिनय करने वाले कलाकार पहलवान शरीरवाले, स्टंट करने वाले और उछल-कूद करने वाले थे।

(घ) नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल औरतों में लोकप्रिय थी।

(ङ) आलम आरा भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिमी एशिया में बहुत पसंद की गई।

(च) अर्देशिर की कंपनी ने सौ मूक तथा सौ सवाक फिल्में बनाईं।

(छ) आलम आरा फिल्म 10 हजार फुट लंबी थी।

(ज) 'अरेबियन नाइट्स' जैसी फैंटसी थी।

3. जब अर्देशिर जो कि भारत में सवाक् सिनेमा के जनक थे, को सम्मानित किया गया तब उन्होंने यह बात कही थी। वे भारत के ऋणी थे और उस ऋण को उतारने में उनका एक छोटा-सा योगदान था। वे विचारों के कितने धनी थे, देश के प्रति उनके मन में कितनी भक्ति-भावना थी वह इनके कथन से व्यक्त होती है। वे एक उच्चकोटि के विचारक और दूरदर्शी व्यक्तित्व के धनी थे।

4. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (i)

(च) (i) (छ) (ii)

5. (क) भारत में सन 1931 से पूर्व बनने वाली फिल्में मूक थीं। उनमें कलाकार केवल अभिनय करते थे लेकिन आवाज़ नहीं थी, वे बोलते नहीं थे। यद्यपि विदेशों में बोलती फिल्मों का प्रचलन शुरू हो गया था परंतु भारत में यह तकनीक नहीं विकसित हुई थी। सन 1931 में पहली सवाक् फिल्म 'आलम आरा' बनी जिसके निर्माता थे–अर्देशिर एम. ईरानी।

(ख) 'आलम आरा' फिल्म के पोस्टरों पर लिखा था- 'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते-बातें करते देखो, ऐसा लिखने का कारण था इससे पूर्व भारत में बोलती फिल्म का न बनना। लोगों को आकर्षित करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया गया था।

(ग) नायक विट्ठल ने मुकदमा इसलिए दायर कर दिया कि पहले इस फिल्म में विट्ठल को ही बतौर नायक चुना गया था। परंतु विट्ठल के उर्दू न बोल पाने और बहुत महंगा कलाकार होने के नाते उन्हें हटाकर महमूद को नायक बनाया गया। नाराज़ होकर विट्टल ने मुकद्दमा दायर किया। जिसमें उनकी जीत हुई और इन्होंने ही नायक की भूमिका अदा की।

(घ) 'आलम आरा' फिल्म में नायक थे विट्ठल और नायिका जुबैदा थी। विट्ठल एक स्टंटमैन और उछल-कूद करने वाले प्रसिद्ध अभिनेता थे। उनमें एक कमी थी उर्दू की जानकारी न होना। यही कारण था इन्हें पहली सवाक् फिल्म में काम करने का अवसर न देकर महमूद को बतौर नायक मुकर्रर करना।

(ङ) 'आलम आरा' फिल्म सर्वप्रथम 14 मार्च, 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित हुई। यह फिल्म लगातार 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' चली। इस फिल्म को देखने के लिए भीड़ इतनी उमड़ती थी कि उसे नियंत्रित करने में पुलिस को बहुत परेशानी उठानी पड़ती थी। दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अद्भूत अनुभव थी।

(च) शुरुआत में सवाक् फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों एवं अरबी प्रेम-कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इसके अतिरिक्त कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं।

(छ) समाज पर फिल्म के अभिनेता-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर पड़ता था- यह बात सिद्ध होती है उस समय की बनी एक सामाजिक फिल्म-'खुदा की शान'। इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इस कारण भारतीय सवाक् फिल्मों को ब्रिटिश प्रशासकों का कोपभाजन होना पड़ा।

6. (क) ईरान (ख) दिन (ग) भारत (घ) समाज

(ङ) परिश्रम (च) विदेश

7.

	उपसर्ग	प्रत्यय
(क)	स	
(ख)		कार
(ग)		इत
(घ)	प्र	
(ङ)		ई

8. पटकथा	–	स्त्रीलिंग	फ़िल्म	–	स्त्रीलिंग
नाटक	–	पुल्लिंग	उपलब्धि	–	स्त्रीलिंग
चयन	–	पुल्लिंग	संदेश	–	पुल्लिंग
शुरुआत	–	पुल्लिंग	योगदान	–	पुल्लिंग
भाषा	–	स्त्रीलिंग	अनुभव	–	पुल्लिंग
9. सजीव	–	निर्जीव	सम्मान	–	अपमान
कामयाबी	–	असफलता	जीत	–	हार
अच्छा	–	बुरा	प्रकाश	–	अंधेरा
पश्चिम	–	पूरब	शुरू	–	अंत
अपना	–	पराया	व्यवस्था	–	दुर्व्यवस्था

10. **साबुन का विज्ञापन**

आ गया। आ गया। चंदन की महक लिए अच्छा नहाने का साबुन–

जो आप की त्वचा को मुलायम और स्वच्छ बनाए–

नीम और अन्य प्राकृतिक जड़ी–बूटियों के योग से तैयार

चर्म–रोगों से मुक्ति दिलाए,

तैलीय त्वचा वालों के लिए लाभकारी

बालों से रूसी हटाए

पहले खरीदने वाले ग्राहक को मिलेगा एक के बदले एक मुफ्त।

शीघ्र आइए, अपने नजदीकी दुकानदार से मिलिए।

11. मदर इंडिया, गाइड, रोटी कपड़ा और मकान, सत्यम शिवम सुंदरम, रंग दे बसंती, थ्री इडियटस, सरफ़रोश, राजा हिंदुस्तानी, अंश, सिंघम आदि।

12. मूक फिल्म का अर्थ है– अवाक् या बिना बोलती हुई फिल्म। सन 1931 से पूर्व भारत में मूक या अवाक् फिल्में बनती थीं। इन फिल्मों में अभिनेता केवल अभिनय करते थे। उन्हें कुछ कहना नहीं पड़ता था। सन 1931 में सबसे पहली सवाक् फिल्म बनी 'आलम आरा'। इसके निर्माता थे अर्देशिर एम. ईरानी। इसके बाद भारत में भी मूक फिल्मों के निर्माण का प्रचलन बंद हो गया। सन 1912 में सबसे पहली मूक फिल्म बनी 'पुंडालिका'। परंतु कुछ लोग पहली फिल्म 'राजा हरीशचंद्र' मानते हैं जिसे सन 1913 में दादा साहब फाल्के ने बनाई। ब्रजभाषा की मूक फिल्म– ब्रज भूमि, सती सुलोचना (1934), भीष्म प्रतिज्ञा (1921) बिलबा मंगल (1919), ज्यामती (1935)।

अध्याय–12

सुदामा चरित

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
   (च) ✓ (छ) ✓

2. (क) सुदामा अपने बचपन के मित्र भगवान श्रीकृष्ण से मिलने गए थे।
   (ख) हाय सखा! तुमने बहुत दुख पाया। इतने दिन बीतने पर आए, अब तक कहाँ थे?
   (ग) सुदामा की दीन–दशा देखकर दयानिधान कृष्ण बहुत रोए।
   (घ) सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए उपहार में चावल भेजे थे।

(ङ) 'सुदामा चरित' कविता के रचयिता नरोत्तम दास हैं।

(च) कविता में पांडे शब्द सुदामा के लिए आया है।

(छ) सुदामा अपने गाँव के लोगों से अपने घर का पता पूछ रहे हैं।

(ज) जब सुदामा अपने गाँव पहुँचे तो उन्हें लगा, वह पुनः द्वारका लौट आए हैं। वहाँ इनकी झोपड़ी गायब थी और द्वारका की भाँति गज, बाजि महल आदि वहाँ मौजूद थे।

3. (क) श्रीकृष्ण सुदामा की ऐसी दीन-दशा को देख आर्तनाद कर उठे। पाँव में पनही (जूता) न होने के कारण बिवाइयाँ बेहाल, पाँवों में काँटों का जाल देख मित्र की दुर्दशा पर द्रवित होकर श्रीकृष्ण बोल उठे- हाय मित्र। तुम इतना कष्ट झेलते अब तक कहाँ थे। क्या तुम्हें हमारी याद कभी नहीं आई! यह कहते हुए श्रीकृष्ण बहुत दुखी हुए।

(ख) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि सुदामा के संकोच और श्रीकृष्ण के विद्यार्थी जीवन की याद को विनोदपूर्ण शिकायत के शब्दों में वर्णन करते हुए कहते हैं– हे मित्र! अमृत से पगी हुई यह पोटली अपनी काँख में क्यों छिपाते जा रहे हो। क्या तुम्हारी बचपन की आदत अभी भी नहीं गई? (जब श्रीकृष्ण और सुदामा एक ही गुरुकुल में साथ पढ़ते थे तो गुरुमाता ने सुदामा को भुने चने दिए थे कि दोनों खा लेना। उसे बिना श्रीकृष्ण को बताए सुदामा अकेले ही खा गए।) उसी की बात कहते हुए सुदामा के साथ विनोद करते हैं।

4. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (iii)

(ङ) (iii) (च) (iii) (छ) (iv)

5. (क) सुदामा श्रीकृष्ण के बाल सखा थे और दोनों गुरुकुल में एक साथ पढ़े थे। श्रीकृष्ण कंस-वध के पश्चात जरासंध से युद्ध में परेशान हो द्वारका जाकर रहने लगे थे। सुदामा एक गरीब ब्राह्मण थे। उन्हें धन की आकांक्षा न थी। वे ईश्वरानुरागी व्यक्ति थे परंतु उनकी पत्नी की महत्त्वाकांक्षा अधिक थी। उसी के दबाव वश वे श्रीकृष्ण से मिलने द्वारका गए थे।

(ख) जिस समय सुदामा श्रीकृष्ण से मिलने गए, उनकी विपन्नावस्था थी। उनके सिर पर पगड़ी नहीं थी, शरीर पर वस्त्र फटे हुए थे। पाँवों में पनही न होने से बिवाइयाँ फटी हुई थीं और पाँवों में काँटे ऐसे चुभे हुए थे मानों जाला बना लिए हों। कहने का तात्पर्य है कि उनकी बहुत गरीबी की दशा थी।

(ग) द्वारका से लौटते समय सुदामा के मन में श्रीकृष्ण के यहाँ इस रूप में आने से बहुत दुख था। वह दुख इसलिए था कि बहुत बड़े के घर दीन-हीन व्यक्ति को सिवा अपमान के कुछ नहीं मिलता। उन्हें इस बात का दुख था कि श्रीकृष्ण इतना शक्ति एवं साधन सम्पन्न होने पर भी उनकी कुछ सहायता नहीं किए।

(घ) जब सुदामा अपने गाँव पहुँचे तो वहाँ आए बदलाव से वे भ्रमित हो गए। उन्हें भ्रम हुआ कि कहीं वह रास्ता भटक कर पुनः द्वारका तो नहीं आ गए। क्योंकि उन्होंने जैसा, जो कुछ द्वारका में देखा था वैसा ही राज-समाज, हाथी-घोड़े और महल यहाँ भी दिखाई दे रहा था। वे सबसे अपनी झोपड़ी का पता पूछते घूम रहे थे परंतु उन्हें अपनी झोपड़ी कहीं नहीं दिखाई दी।

(ङ) सुदामा के द्वारका पहुँचने पर श्रीकृष्ण ने उनका बहुत हृदय से स्वागत किया। उन्हें सिंहासन पर बिठाकर उनका पाँव धोने के लिए परात में जल लेकर बैठे परंतु मित्र की ऐसी दीन-दशा देख उनका हृदय द्रवित हो उठा और आँखों से अश्रुजल गिरने लगा। उनके आँसुओं से ही उनका पैर धुल गया।

(च) श्रीकृष्ण ने सुदामा के साथ एक सच्चे मित्र का धर्म निभाया। सुदामा के पहुँचते ही दौड़कर उन्होंने उनको गले लगाकर स्वागत किया। सिंहासन पर बिठाया। उनकी दीन-दशा देख वे रोने लगे। विदा करते समय श्रीकृष्ण ने एक मित्र की भाँति विदा किया परंतु उनकी बिना जानकारी के उन्हें इतना कुछ दे दिया, जिसकी सुदामा को आशा और अपेक्षा दोनों न थी।

(छ) गुरुमाता महर्षि संदीपनि की धर्मपत्नी थीं। सुदामा और श्रीकृष्ण संदीपनि के यहाँ आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। आश्रम में पढ़ते समय एक बार श्रीकृष्ण और सुदामा को आश्रम के लिए सूखी लकड़ियाँ लाने का काम सौंपा गया। जंगल जाते समय गुरुमाता ने दोनों के लिए चने दिए। सुदामा बिना श्रीकृष्ण को चना दिए अकेले ही खा गए।

6.

सीस	–	शीष	करुना	–	करुणा
पौटरी	–	पोटली	भौन	–	भवन

दसा	–	दशा	मारग	–	मार्ग
परताप	–	प्रताप	झोपरी	–	झोपड़ी

7.

वसुधा	–	धरा	पृथ्वी	मही
सखा	–	मित्र	दोस्त	साथी
नैन	–	नेत्र	आँख	नयन
सुधा	–	अमृत	सोम	पियूष
द्‌विज	–	ब्राह्मण	भूसुर	पंडित
घर	–	भवन	निकेत	निवास स्थान

8. (क) उपमा अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार
(ग) पुनरावृति अनुप्रास (घ) अनुप्रास अलंकार
(ङ) अनुप्रास अलंकार (च) अनुप्रास अलंकार

9.

तन	–	पुल्लिंग	बसुधा	–	स्त्रीलिंग
धोती	–	स्त्रीलिंग	दुख	–	पुल्लिंग
द्‌वार	–	पुल्लिंग	पानी	–	पुल्लिंग
झोपड़ी	–	स्त्रीलिंग	घर	–	पुल्लिंग
राज	–	पुल्लिंग	नींद	–	स्त्रीलिंग

10. संसार की प्रसिद्‌ध मित्र जोड़ियों में श्रीकृष्ण-सुदामा की मित्रता, दुर्योधन-कर्ण की मित्रता जगत प्रसिद्‌ध है। कृष्ण और अर्जुन की मित्रता भी स्तुत्य है।

रमेश - मित्रता हो तो कृष्ण और सुदामा जैसी।

सुरेश - सुदामा और कृष्ण की मित्रता में ऐसी कौन-सी विशेष बात है?

रमेश - कृष्ण राजा होने पर भी मित्रता के समक्ष राजधर्म को त्याग दिया और मित्र-धर्म को निभाया। श्रीकृष्ण को ज्यों ही पता लगा सुदामा ड्योढ़ी पर खड़े हैं, श्रीकृष्ण राज-सिंहासन छोड़कर दौड़े राजद्‌वार पर आए और विपन्न सुदामा को गले लगा लिया। उन्होंने राजा की सभी मर्यादाएँ तोड़कर सुदामा द्‌वारा लाए सूखे चावल को चबाने लगे।

सुरेश - इतना करने पर भी सुदामा तो गरीब ही रहे।

रमेश - नहीं भाई! सुदामा को भी राजा जैसा ही बना दिया। जब वे अपने गाँव पहुँचे तो वे अपना गाँव ही नहीं पहचान सके। उन्हें भी धनी बना दिए।

11. मित्रता शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण और पवित्र होता है। मित्रता दो हृदयों, दो मन या दो आत्माओं का मिलन होता है। यह गठबंधन बहुत ही कोमल तंतुओं से बँधता है। मित्रता में स्वार्थ का तनिक भी स्थान नहीं होता। जहाँ स्वार्थ की भावना जन्मी वहाँ मित्रता का वह कोमल तंतु टूट जाता है। मित्रता त्याग पर आधारित होती है। मित्र के लिए कुछ भी करने का जुनून ही मित्रता है। यह जुनून दोनों तरफ़ से होना चाहिए। हमने भी मित्र धर्म निभाया है अपनी पढ़ाई के समय। हमारे एक मित्र थे बिजेंद्र सिंह। पढ़ने में मेधावी थे। किन्हीं कारणों से घर से उनके पिता जी ने उन्हें भगा दिया। मैं जब तक वहाँ था, उनका खर्च निभाता रहा। वे हमसे पढ़ने में बहुत मेधावी थे। सदैव प्रथम श्रेणी में आते। किन्हीं कारणों से हमें इलाहाबाद छोड़ना पड़ा। हमारा उनका साथ छूट गया। कुछ दिनों तक संपर्क रहा फिर हमारी ही तरफ़ से चूक हुई। बिना किसी शिकवा-शिकायत के हम लोग एक-दूसरे से दूर हो गए परंतु उनकी स्मृति आज भी हमारे मन में है।

अध्याय-13

जहाँ पहिया है

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗ (च) ✓

2. (क) किला कुरुचि गाँव की महिलाओं द्वारा साइकिल सीखने का उल्लेख किया गया है।

   (ख) पुडुकोट्टई ज़िले की हजारों ग्रामीण महिलाओं ने अपनी आज़ादी, स्वाधीनता और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है।

   (ग) 'जहाँ पहिया है' पाठ के लेखक का नाम पी. साईंनाथ है।

   (घ) तमिलनाडु राज्य के पुडुकोट्टई ज़िले में साइकिल की धूम मची हुई है।

   (ङ) युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती दिखाई देती हैं।

   (च) साइकिल प्रशिक्षण में महिलाओं के अंदर साइकिल सीखने-सिखाने की भावना दिखाई देती है।

   (छ) लेखक की सोच थी कि महिलाओं का साइकिल चलाना आर्थिक पहलू के कारण ही है, गलत लगी जब लेखक की फातिमा से बात हुई। फतिमा ने बताया-यह आर्थिक मामला ही नहीं है; बल्कि इससे आज़ादी, खुशहाली की अनुभूति होती है।

3. (क) महिलाएँ कहीं भी आने-जाने के लिए पुरुषों पर पूर्णतया निर्भर थीं, चाहे काम पर जाना हो, हाट-बाज़ार जाना हो या पानी लाने को जाना हो, उन्हें पुरुषों या अपने पैरों पर निर्भर रहना पड़ता था। अब हम पूर्ण स्वतंत्र हैं, कहीं भी आ-जा सकती हैं। इससे पैसे और समय की बचत होती है, हमें आज़ादी और आत्मसम्मान की भी अनुभूति होती है।

   (ख) वहाँ महिलाएँ साइकिल प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देने के लिए नव-साइकिल चालक जिनका आशय है- ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए के संग। यह पुडुकोट्टई जिले की महिला सामाजिक क्रांति है।

4. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (ii) (च) (i)

5. (क) पुडुकोट्टई जिले की ग्रामीण महिलाओं ने अपने पिछड़ेपन को दूर करने और अपना विरोध व्यक्त करने और उन जंजीरों को जिसमें वे जकड़े हुए हैं तोड़ने के लिए साइकिल को चुना है। यहाँ की ग्रामीण महिलाएँ अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को स्पष्ट करने के लिए साइकिल प्रशिक्षण आंदोलन को अपनाया है।

   (ख) ग्रामीण पुडुकोट्टई के रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई ज़मीला बीवी नामक एक युवती ने लेखक से बताया- साइकिल चलाना मेरा अधिकार है। हम अब कहीं भी आ-जा सकती हैं। अब हमें बस या दूसरे साधनों का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। वह बताती हैं कि जब उसने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग फब्तियाँ कसते थे। लेकिन उन्होंने उसपर ध्यान नहीं दिया।

   (ग) फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में शिक्षिका हैं। यद्यपि पैसे के अभाव के कारण वे अपनी साइकिल नहीं खरीद सकतीं परंतु उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि वे प्रतिदिन किराए पर साइकिल लेकर चलाती है। फातिमा ने भी यही बताया कि साइकिल चलाना एक आज़ादी की अनुभूति है।

   (घ) ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल चलाने से होने वाली उपलब्धियों को लेखक से बताया, वे साइकिल चलाने पर आज़ादी और गतिशीलता महसूस करती ही हैं, हमें इससे आर्थिक लाभ, समय की बचत भी है। साइकिल चलाना जान लेने के बाद उन्हें दूर से पानी लाने, कृषि-उत्पाद को दूर तक जाकर बेच आने में आसानी हो गई है।

   (ङ) किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखने वाली महिलाएँ रविवार को इकट्ठी हुईं। उनके साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन का आवेग देखकर कोई भी आश्चर्यचकित हो जाएगा। साइकिल ने उनके जीवन में नवक्रांति उत्पन्न कर दी है। ये नव साइकिल चालक साइकिल चलाना सीखने के प्रोत्साहन के लिए गाने भी गाती हैं।

   (च) पुडुकोट्टई जिले की ग्रामीण महिलाओं के जीवन में साइकिल आंदोलन से आए बदलावों की एक पूरी सूची है। इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मबल प्रदान किया है। सबसे बड़ी बात है, कि साइकिल आंदोलन ने महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता समाप्त कर दी है। कोई भी महिला चार किलोमीटर दूरी आसानी से तय कर पानी लाने चली जाती है। बहुत सहारा मिला है इस आंदोलन से।

6. (क) साइकिल आंदोलन महिला की आज़ादी अभिव्यक्त करने में पूर्ण सफल हुआ है।

(ख) नवसाक्षर लड़कियाँ या महिलाएँ इस आंदोलन में खूब बढ़-चढ़कर भाग ली हैं।

(ग) पुडुकोट्टई की महिलाएँ साइकिल आंदोलन से आज़ादी, स्वाधीनता, और गतिशीलता की अनुभूति करने लगी हैं।

(घ) पुडुकोट्टई जिले में महिला साइकिल आंदोलन एक सामाजिक क्रांति बन गया है।

7. महिला–महिलाएँ   रास्ते–रास्ता   सेविका–सेविकाएँ   व्यवस्था–व्यवस्थाएँ   साइकिल–साइकिलें

युवती–युवतियाँ   टिप्पणियाँ–टिप्पणी   उपलब्धि–उपलब्धियाँ

8. पुनरुक्त–पुडुकोट्टई, टिप्पणियाँ, अन्नामलाई, महत्त्व, सम्मान

योजक–कभी-कभी, अजीबो-गरीब, नई-नई, गंदी-गंदी, अगल-बगल

9. महिलाओं द्वारा साइकिल चलाना सर्वथा उचित है। आज के बदलते परिवेश की दृष्टिकोण से भी, स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी और आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से भी। साइकिल चलाने से सर्वोत्तम लाभ है स्वास्थ्य लाभ। साइकिल चलाने से शरीर चुस्त-दुरुस्त रहता है। आधुनिक युग में स्त्रियाँ अंतरिक्ष तक पहुँच गई हैं फिर साइकिल चलाना कैसे अनुचित कहा जा सकता है।

10. पुरुष और नारी जीवनरूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। एक-दूसरे के बिना दोनों अपूर्ण हैं। किसी भी राष्ट्र, समाज का निर्माण बिना दोनों के सहयोग से हो ही नहीं सकता। जब नारी खुलकर समाज में नहीं आती थी तब भी पुरुष के चरित्र-निर्माण में स्त्री की ही भूमिका अधिक थी। तब भी राष्ट्र के विकास का मुख्य सूत्र नारी के पास ही था। आज नारी खुलकर राजनीति, साहित्य, विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान सभी क्षेत्रों में भाग ले रही हैं और राष्ट्र-निर्माण में सहयोग कर रही हैं।

अध्याय-14

अकबरी लोटा

1. (क) ✓   (ख) ✗   (ग) ✗   (घ) ✗   (ङ) ✓

(च) ✗   (छ) ✓

2. (क) ढाई सौ रुपए की।   (ख) एक सप्ताह में।   (ग) पं. बिलवासी मिश्र से।

(घ) पत्नी को ढाई सौ रुपए देने की चिंता में।

(ङ) अभी लाला एक-दो घूँट पानी ही पीए होंगे कि न जाने कैसे उनका हाथ हिल उठा और लोटा हाथ से छूट गया।

(च) लोटा एक अँग्रेज़ ने पाँच सौ रुपए में खरीदा।

(छ) 'अकबरी लोटा' पाठ के लेखक का नाम है- अन्नपूर्णानंद वर्मा।

3. मेजर डगलस को किसी ने जहाँगीरी अंडा दिया था। अब ये यहाँ से जहाँगीर के बाप अकबर का लोटा लेकर जा रहे थे। इसलिए अति प्रसन्न थे। इस प्रकरण से लेखक अंग्रेज़ों की लालची प्रवृत्ति और बेवकूफी को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

4. (क) (ii)   (ख) (ii)   (ग) (i)   (घ) (iii)   (ङ) (i)

(च) (iii)

5. (क) लाला झाऊमल अपनी पत्नी पर इसलिए तिलमिला उठे कि उसने ढाई सौ रुपए के लिए अपने भाई से मुँह खोलने की बात कह दी। इससे लाला को अपनी तौहीन महसूस होने लगी।

(ख) जब चार दिन तक रुपयों का प्रबंध न हो सका तो उन्हें अपने साख की चिंता होने लगी। सवाल उनकी प्रतिष्ठा का था, पत्नी की निगाह से गिरने का था। वह सोचने लगे कि यदि प्रबंध न कर सके तो वह क्या सोचेगी, उसकी नज़रों में उनका क्या मूल्य रह जाएगा।

(ग) लाला झाऊमल बिलवासी मिश्र से इसलिए नाराज़ हो रहे थे कि वे उसी अंग्रेज़ की तरफ़दारी कर उन्हें फँसाने की कोशिश कर रहे थे। दूसरी बात यह थी कि अंग्रेज़ के सामने उन्होंने लाला जी को पहचानने से भी इनकार कर दिया था और पुलिस थाने चलने की बात कह रहे थे।

(घ) मेजर डगलस को ऐतिहासिक चीज़ों का संग्रह करने का शौक था। वे प्राचीन वस्तुओं को एकत्र करने के शौकीन थे। इसी परिप्रेक्ष्य में पिछली बार वह भारत से जहाँगीरी अंडे ले गए थे और वहीं डींग मारते थे।

(ङ) बुज़ुर्ग पूर्वज़ों ने पानी पीने के नियम बनाए थे, वे इस प्रकार थे- खड़े-खड़े पानी नहीं पीना चाहिए। सोते समय पानी नहीं पीना चाहिए। दौड़ने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए। समय पर पानी पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक समझा जाता था।

(च) बिलवासी मिश्र ने लोटे की ऐसी महत्ता प्रदर्शित की कि अंततः लोटे को उस बेवकूफ अंग्रेज़ ने 500/- देकर खरीद लिया, जैसा कि बिलवासी मिश्र चाहते थे। लोटा बिकने से सबसे अधिक फ़ायदा हुआ लाला झाऊमल का।

(छ) 'अकबरी लोटा' पाठ से हमें यह संदेश मिलता है कि मिथक और मनगढ़ंत किंवदंतियों और कहानियों पर आँखें बंद कर विश्वास नहीं करना चाहिए। अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग करना चाहिए। अनावश्यक लालच में नहीं फंसना चाहिए।

(ज) लाला झाऊमल अच्छे-खासे खाते-पीते घर के हैं। उनका वाराणसी के ठठेरी बाज़ार में अपना घर है। अपने खर्च भर की उनकी आमदनी है परंतु संग्रह उनकी प्रवृत्ति नहीं है। वे एक आत्मसम्मानी एवं शरीफ़ व्यक्ति हैं। पत्नी के पैसे माँगने पर असमंजस में पड़ जाते हैं परंतु जब वह अपने भाई से पैसे माँगने की बात करती है तो वे तिलमिला उठते हैं। वे नहीं चाहते कि उनकी पत्नी किसी के सामने हाथ फैलाए।

(झ) जहाँगीरी अंडे की कहानी इस प्रकार है- पाठ के आधार पर नूरजहाँ से जहाँगीर को प्यार एक कबूतर के चलते हुआ था। हुआ यह कि नूरजहाँ ने जहाँगीर के पाले एक कबूतर को उड़ा दिया। जब जहाँगीर ने उससे पूछा कि तुमने कबूतर कैसे उड़ जाने दिया तो नूरजहाँ ने दूसरा कबूतर उड़ाकर कहा- इस तरह। जहाँगीर नूरजहाँ की इस अदा पर फ़िदा हो गया। उड़ते समय कबूतर का एक अंडा था। जहाँगीर ने उस अंडे को याददाश्त के रूप में बिल्लोर की हाँडी में रख दिया। वही अंडा 'जहाँगीरी अंडा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

6. (क) स्तब्ध रह जाना – रमेश की मृत्यु का समाचार सुन ऐसे लगा मानो काटो तो बदन में खून नहीं।

(ख) जोश में आना – सुरेश को मोहन की उत्तेजक बातें सुन एकाएक ताव आ गया और लड़ने को आमादा हो गये।

(ग) चुपचाप लौटना – कमरे में पिता जी को सोता देख मैं दबे पाँव लौट गया।

(घ) दिखाई न पड़ना – देखते ही देखते हिरन आँखों से ओझल हो गया।

7. (क) कहानियाँ – गाथाएँ

(ख) खज़ाना – कोष

(ग) खोज – ईजाद

(घ) पीढ़ी – पुश्त

(ड.) सम्मान – प्रतिष्ठा

(च) अदृश्य – ओझल

8. यदि लोटा छत से नीचे न गिरता तो लाला झाऊलाल को अपने वायदे के अनुसार रुपए न दे पाने की स्थिति में बहुत शर्मिंदा होना पड़ता। वे अपनी पत्नी की आँखों से गिर जाते या पंडित बिलवासी मिश्र यदि व्यवस्था कर देते तो लाला के ऊपर एक कर्ज़ होता।

9. विद्यार्थी अपने शिक्षक से सहायता लेकर लिखें।

अध्याय-15

सूरदास के पद

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी?

(ख) वे आश्चर्य इसलिए कर रहे हैं कि इतने दिनों से दूध पीते हो गया फिर भी चोटी नहीं बढ़ी।

(ग) क्योंकि वे चाहते हैं कि जल्दी से बलराम जैसे हो जाएँ। उनकी चोटी भी बड़ी हो जाए।

(घ) यशोदा कृष्ण को गले लगाकर कहतीं है कि तुम दोनों भैया की जोड़ी चिरंजीवी हो।

(ङ) गोपी शिकायत लेकर यशोदा मैया के पास गईं।

(च) गोपी यशोदा से कहती हैं कि आपने अनोखा पुत्र उत्पन्न किया है।

(छ) प्रतिदिन दूध की हानि होती है।

3. प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण माता यशोदा से शिकायती भाव से पूछते हैं कि हे मैया, हमारी यह चोटी कब बढ़ेगी। तुम तो कहती हो कि यह बलराम की चोटी की भाँति मोटी और लंबी हो जाएगी। प्रतिदिन इसकी चोटी-कंघी करने से नागिन की भाँति भूमि पर लोटने लगेगी। श्रीकृष्ण के बाल हठ को इस पद्य में दर्शाया गया है।

4. (क) (i) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (iii)

5. (क) चोटी बढ़ाने की लालच में कृष्ण दूध पीने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि बालक श्रीकृष्ण को लालच देकर दूध पिलाती हैं कि दूध पीने से तुम्हारी भी चोटी बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। श्रीकृष्ण माता यशोदा से पूछते हैं कि कितनी बार मैं दूध पी चुका परंतु यह अभी छोटी ही है।

(ख) कृष्ण की बाल सुलभ प्यार भरी वाणी सुनकर वात्सल्य रस से सराबोर हो उठती हैं और आशीर्वाद देती हैं कि तुम दोनों भाइयों (श्रीकृष्ण और बलराम) की जोड़ी चिरंजीवी रहे।

(ग) गोपी माता यशोदा के पास श्रीकृष्ण का उलाहना लेकर गई और कहती हैं कि हे यशोदा, तुम्हारे लाल श्रीकृष्ण ने हमारा माखन खा लिया। दोपहर के समय घर को सूना जान अपने आप ही घर में ढूढ़ लिया। किवाड़ खोलकर घर में सारी दूध-दही अपने और अपने सखा ग्वाल-बालों को पिला दिया। प्रतिदिन दूध का नुकसान करते हैं।

(घ) कृष्ण गोपियों के घर दोपहर को इसलिए जाते हैं क्योंकि उस समय घर सूना रहता है। उस समय घर का प्रत्येक सदस्य अपने काम के लिए घर से बाहर रहता है।

(ङ) गोपी माता यशोदा के यहाँ उलाहना देने के बहाने श्रीकृष्ण को देखने आती हैं क्योंकि उन्हें बिना श्रीकृष्ण को देखे चैन नहीं मिलता इसीलिए किसी न किसी बहाने वे माता यशोदा के यहाँ आती हैं।

6. (क) हलधर – बहुब्रीहि समास

(ख) माखन/रोटी – द्वंदव समास

(ग) गोरस – तत्पुरुष समास

7. कम्युनिस्ट पार्टी के झंडे का रंग लाल है।

लाल बहादुर शास्त्री को भारत का लाल कहा जाता है।

गणित का यह प्रश्न हल करना थोड़ा कठिन है।

श्रीकृष्ण के भाई बलराम का मुख्य आयुध हल और मूसल था।

रामधारी सिंह दिनकर की गणना हिंदी के चोटी के कवियों में की जाती है।

श्रीकृष्ण के भाई बलराम की चोटी बहुत लंबी और मोटी है।

8. दूध–दुग्ध भैया–भ्राता

दिन–दिवस दही–दधि

9. माँ – बेटा अविनाश, सवेरे उठ जाओ। सवेरे का उठना अच्छा होता है।

बेटा – ऊँऽऽ अभी नहीं माँ, थोड़ी देर और सो लेने दो।

माँ – बेटा, जो सोता है वह खोता है। जो जागता है, वह पाता है। इसलिए जल्दी उठना चाहिए।

बेटा – माँ, तुम रोज-रोज कहती हो–जो जागत है सो पावत है परंतु मुझे तो आज तक कुछ नहीं मिला।

माँ – बेटा जो जल्दी उठता है उसे अवश्य मिलता है। बस समझ होनी चाहिए।

बेटा – तो बताओ न, हमें क्या मिला?

माँ – सवेरे उठने से तुम स्वस्थ हो। सवेरे उठकर स्कूल का अपना सारा काम कर लेते हो, कक्षा में प्रथम आते हो। बताओ तुम्हें मिला की नहीं।

10. बच्चों की प्रवृत्ति जिज्ञासु होती है। उन्हें जानने की प्रबल आकांक्षा होती है। उनका मन खोजी प्रवृत्ति का होता है। वह प्रतिक्षण कुछ न कुछ नया सोचना चाहते हैं, नया जानना चाहते हैं। उनकी इस जिज्ञासा का धैर्यपूर्वक समाधान करना चाहिए, उन्हें कभी दबाना नहीं चाहिए। बच्चों का मन बहुत कोमल होता है। एक बार उनकी जिज्ञासा दब गई, फिर वे कुछ नहीं सोच पाएंगे।

अध्याय-16

पानी की कहानी

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓
   (च) ✓ (छ) ✗

2. (क) लेखक को सितार के तारों की-सी झंकार सुनाई देने लगी।
   (ख) लेखक को तब आश्चर्य हुआ जब बेर की झाड़ी पर से लेखक के हाथ पर एक बूँद आ पड़ी।
   (ग) ओस की बूँद ने लेखक को बताया कि मैं ओस हूँ। लोग मुझे पानी और जल भी कहते हैं।
   (घ) बूँद पत्तों के नन्हें-नन्हें छेद से होकर जैसे-तैसे जान बचाकर भागी।
   (ङ) बूँद भाग्य पर भरोसाकर पत्तों पर ही सिकुड़ी पड़ी रही और लेखक को देख उसके हाथ पर कूद पड़ी।
   (च) हद्रजन और ओषजन के रासायनिक क्रिया के कारण बूँद रूप में उत्पन्न हुई।
   (छ) बूँद को समुद्र में अच्छा नहीं लगा क्योकि उसका जल खारा था। वह वहाँ से भाग निकलने की सोचने लगी।
   (ज) एक मछली ऐसी देखी जो मनुष्य से कई गुना लंबी थी। उसके आठ हाथ थे।
   (झ) पृथ्वी के फटने पर उसमें से धुआँ, रेत, पिघली धातुएँ तथा लपटें निकल रही थीं।

3. (क) समुद्र के नीचे की सतह पर पहुँचने पर बूँद इस सोच में पड़ गई कि इस जल के विशाल भंडार में जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा। वह यह सोच ही रही थी कि उसे समुद्र में एक ऐसा जीव दिखाई दिया जिसके शरीर से ऐसा प्रकाश निकल रहा था मानो वह लालटेन लिए घूम रहा हो। वह इसे देख आश्चर्य में पड़ गई।
   (ख) बूँद ने अपनी शक्ति का परिचय देते हुए कहा कि हम लोग पत्थर को भी चूर करने की क्षमता से संपन्न हो आपस में इधर-उधर उन्मत्त हो बिखर गए। बूँद की इच्छा बहुत दिनों से समतल भूमि देखने की थी, वह जल और पर्वतीय प्रदेश देख ही चुकी थी, इसलिए वह एक छोटी धारा में मिल गई। अर्थात नदी में मिल गई।

4. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (i) (ङ) (iii)
   (च) (iii)

5. (क) लेखक ने बूँद को आश्वासन दिया कि जब तक तुम मेरे पास हो, कोई पत्ता तुम्हें न छू सकेगा।
   (ख) बूँद पत्तों के नन्हें-नन्हें छेदों से जैसे-तैसे जान बचाकर भाग निकली। उसने सोचा था कि पत्ते पर पहँचते ही सूर्य की ऊर्जा ग्रहण कर शीघ्र उड़ जाएगी परंतु दुर्भाग्य कि उस समय सूर्य अस्ताचल को जा चुके थे, अब रात्रि होने वाली थी। सूर्य ही बूँदों को उड़ने की शक्ति देते हैं। वह किसी भाँति पत्तों में सिकुड़ी पड़ी रहकर सूर्य के आने का इंतज़ार कर रही थी कि एकाएक उसे लेखक दिखाई दिये और वह उनके हाथों पर कूद पड़ी।
   (ग) भाप के ठोस रूप बर्फ़ पर सूरज की किरणें पड़ने से उसका सौंदर्य बिखर पड़ता था। बूँद के और भी असंख्य साथी थे जो बड़ी उत्सुकता से आँधी में ऊँचा उड़ने, उछलने-कूदने के लिए कमर कसकर तैयार रहते थे।
   (घ) बूँद बनी बर्फ़ अपने साथियों के साथ शांतिपूर्वक बैठे हवा में खेलने की कहानियाँ सुन रहे थे, कि अचानक उन्हें अनुभव हुआ कि वे सरक रहे हों। हमारे साथियों में सबके मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगी थीं।
   (ङ) बूँद अपने असंख्य साथियों के साथ समुद्र की गहराई में कई मील मोटी चट्टान में कई वर्षों के प्रयत्न से चट्टान में

घुसकर पृथ्वी के अंदर एक खोखले स्थान में निकले और एक स्थान पर इकट्‌ठा होकर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए। अंत में इनमें से कुछ ने निर्णय लिया कि हम पृथ्वी के हृदय में प्रवेश कर घूम-घूमकर देखेंगे कि भीतर क्या छुपा है।

(च) बूँद उस स्थान का आनंद भुलाए नहीं भूल सकती थी जब वह वाष्प से बर्फ़ बन गई थीं। उसके असंख्य साथी बर्फ़ बने पड़े थे। जहाँ तक दृष्टि पहुँचती थी, सर्वत्र बर्फ़ ही दिखाई देती थी। जिस समय सूर्य की किरणें बर्फ रूप में बूँदों में पड़ती थीं तो अद्‌भूत सौंदर्य बिखर पड़ता था। यह बड़े आनंद का समय था।

(छ) इस पाठ में अनेक कठिनाइयों का सामना करती हुई बूँद, अपने जीवन की लाखों वर्षों से चली आ रही कहानी इस पाठ के लेखक रामचंद्र तिवारी को सुना रही है।

(ज) बूँद की भेंट जब गरम धारा से हुई तो उसने धारा के अस्तित्व को शीतलता पहुँचाने के लिए उसकी गरमी सोखनी प्रारंभ कर दी। जिसके फलस्वरूप वह पिघल पड़ी और पानी बनकर समुद्र में मिल गई।

6. कहानी–कहानियाँ   आँख–आँखें

हथेली–हथेलियाँ   मीनार–मीनारें

बूँद–बूँदें   मछलियाँ–मछली

घटना–घटनाएँ   किरण–किरणें

7. (क) यद्‌यपि शिवाजी औरंगज़ेब के बिछाए जाल में फँस चुके थे, परंतु अवसर मिलते ही वह जान बचाकर भाग निकले।

(ख) जब मैं बेटे से मिला और उसे देख लिया तब जान में जान आई।

(ग) हमने इस बार आई. ए. एस. परीक्षा के लिए पूरी तरह से कमर कस ली है।

(घ) उस यात्री का ब्रीफकेस तो उड़ा ले गए चोर और लाल-पीला मुझ पर हो रहा है।

(ङ) एकाएक सामने घर के मालिक के आ जाने पर चोर के चेहरे की हवाइयाँ उड़ने लगी।

(च) मेरी आँखों से ओझल हो जाओ वरना मैं अभी पुलिस को बुलाऊँगा।

8. (क) सरल वाक्य   (ख) सरल वाक्य   (ग) सरल वाक्य   (घ) सरल वाक्य   (ङ) सरल वाक्य

9. (क) हद्रजन – हाइड्रोजन - हद्रजन और ओषजन (ऑक्सीजन) के योग से जल बनता है।

(ख) झूठी – झूठ बोलने वाली।

(ग) जूठी – भोजन के बाद बिना धोया बर्तन या खाने के बाद बचा शेष।

10. बच्चे अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

11. जल चक्र

जल —ताप→ वाष्प → बादल —शीतल→ जलकण (बूँद) → वर्षा → जल → वाष्प।

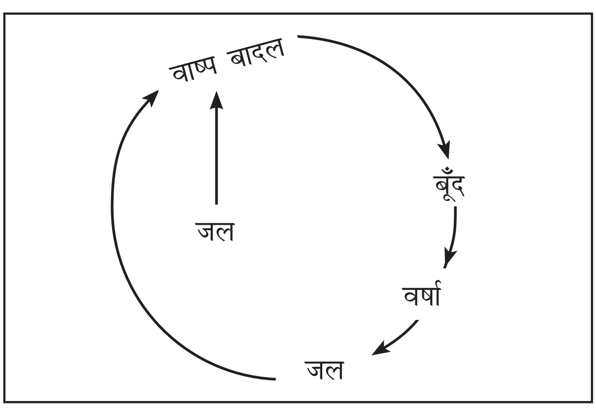

अध्याय-17

बाज और साँप

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
   (च) ✓ (छ) ✓

2. (क) ऊँचे पर्वत की एक अंधेरी गुफ़ा में।
   (ख) साँप की गुफ़ा में।
   (ग) साँप ने बाज से कहा, क्यों भाई, इतनी जल्दी मरने की तैयारी कर ली?
   (घ) बाज का सिर उसके शरीर पर अनेक चोट लगने से घायल होने के कारण झुका हुआ था।
   (ङ) गुफ़ा के अंदर चट्टानों में पड़ी दरारों से गुफ़ा में पानी टपक रहा था। सीलन और अंधेरे से गुफ़ा में एक भयानक दुर्गंध फैली हुई थी।
   (च) बाज अंतिम साँसें गिन रहा था।
   (छ) साँप बाज की मूर्खता पर हँस रहा था।

3. (क) एक साहसी व्यक्ति, देश और समाज पर प्राण न्योछावर करने वाले पुरुष की मृत्यु पर प्रकृति भी रोने लगती है। बाज एक कर्मठ और साहसी, आत्मसम्मानी व्यक्ति का प्रतीक है। नदी के प्रबल प्रवेग में बाज के विलीन हो जाने के कारण नहरें, चट्टानों पर सिर धुनने लगी अर्थात शोकग्रस्त हो गई। देखते-देखते बाज समुद्र की असीम गहराई में विलीन हो गया।
   (ख) साँप कायरता और भीरुता का प्रतीक है। वह बदबूदार और सीलन भरी गंदगी में रहना पसंद करता है परंतु स्वतंत्र और उन्मुक्त जीवन नहीं पसंद करता। वह बाज को ही मूर्ख बताने लगता है। उसे अभागा भी कहता है। उसे जीवन ही महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। ऐसे लोगों को त्याग और बलिदान ही निरर्थक लगने लगता है।

4. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iii) (ङ) (ii) (च) (i)
   (छ) (iii)

5. (क) साँप की गुफ़ा के चट्टानों में पड़ी दरारों से गुफ़ा में पानी टपक रहा था। गुफ़ा में घोर अंधेरा था और सर्वत्र सीलन फैली होने के कारण भयानक दुर्गंध फैली हुई थी, ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई चीज़ वर्षों से पड़ी-पड़ी सड़ रही हो। गुफ़ा के आसपास का सौन्दर्य मनभावन था। समुद्र की लहरें सूर्य के प्रकाश में चमकती, झिलमिलाती हुई दिनभर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थी। गुफ़ा के पास के पर्वतों की घाटियों में एक नदी भी बहती है जो अपने रास्ते के पत्थरों को तोड़ती, शोर मचाती। यह नदी बड़े ज़ोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी।
   (ख) साँप के रहन-सहन और सोच के आधार पर उसे एक सुस्त, काहिल और जीवन-लोलुप प्राणी कहा जा सकता है जो जीने के लिए कुछ भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।
   (ग) बाज एक स्वतंत्रता प्रिय प्राणी है जो उन्मुक्त आकाश में विचरण करना पसंद करता है भले ही स्वतंत्रता के लिए उसे प्राण देने पड़े। वह सीलन भरे अंधेरे बदबूदार बंद स्थान में रहकर जीवन जीना पसंद नहीं कर सकता।
   (घ) साँप की बातें सुनकर उसमें एक प्रेरणा जागृत हुई। उसके मन में उन्मुक्त आकाश विचरण की बात ताज़ा हो गई। वह पूरे उत्साह से अपने आहत शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खींच लाया। खुले आकाश को देखते ही उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी साँस ली और अपने पंख फैला आकाश की दूरी तय करने के लिए हवा में छलाँग लगा दी।
   (ङ) बाज मरकर संदेश दे गया कि स्वतंत्र और उन्मुक्त जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है। संसार का सबसे बड़ा सुख स्वतंत्रता में ही है। खुले आकाश की ऊँचाइयाँ नापना अर्थात अपने लक्ष्य के चरम तक पहुँचना ही जीवन का सर्वोच्च सुख है।
   (च) हम बाज का जीवन आदर्शमय और अनुकरणीय मानते हैं। साँप जीवन-लोलुप है, उसे जीवन चाहिए सब कुछ खोकर भी सड़न और बदबूदार जीवन जीते हुए भी। बाज को स्वतंत्र और उन्मुक्त जीवन प्रिय है चाहे उसके लिए उसे प्राणोत्सर्ग ही क्यों न करना पड़े।
   (छ) प्रश्न (ङ) का उत्तर देखें।

6. (क) पश्चात्ताप करना— रमेश की थोड़ी-सी गलती से उसके पिता नाराज़ होकर घर वापस चले गए। अब बैठा सिर धुन रहा है।

(ख) बड़ी-बड़ी बातें करना— मोहन की डींग हाँकने की आदत है। उसपर ज़्यादा ध्यान देना ठीक नहीं।

(ग) मृत्यु के निकट होना— रमेश के पिता जी इस समय अंतिम साँसें गिन रहे हैं। किसी भी समय वे साँस छोड़ सकते हैं।

(घ) आत्म बलिदान के लिए तैयार रहना— सरदार भगत सिंह हरदम प्राण हथेली पर रखे हुए चलते थे।

(ङ) दृढ़ प्रतिज्ञ होना— इस पद को प्राप्त करने के लिए अभिनेता ने अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।

7. (क) लहरें (ख) पहाड़ों (ग) पंखे (घ) बूँद (ङ) साँस

(च) गुफ़ा (छ) चट्टानें (ज) पत्थरों

8. (क) कर्ता कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) संप्रदान कारक (घ) करण कारक (ङ) संबोधन

9. सफ़ेद ज़मीन

ज़िंदगी आवाज़

ज़ोर तूफ़ानी

सिर्फ़ बाज़ी

10. इनसान के जीवन में स्वतंत्रता का उतना ही महत्त्व है जितना उसके जीवन में भोजन, वायु और पानी का है। स्वतंत्र जीवन उन्मुक्त जीवन है। स्वतंत्रता लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, उन्नति का मार्ग प्रदान करती है। स्वतंत्रता एक चरित्र का निर्माण करती है जिससे मनुष्य को अपना लक्ष्य साधने में आसानी होती है।

हमें बाज के समान जीवन जीना पसंद है। बाज में स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा है और उसके लिए प्राण न्योछावर करने की तमन्ना है। उसे खुले आकाश में विचरण करने में स्वर्ग सुख की अनुभूति होती है। ऐसा ही जीवन हमें भी नसीब हो जाए, यही हमारी इच्छा है।

11. बाज की मृत्यु के बाद लहरों ने जो गीत गया, वह मुर्दा दिलों में भी प्राण का संचार कर देने वाला गीत था। उस गीत को सुनने के बाद साँप के मन में उमंग का संचार हुआ होगा। अकसर बहुत से ऐसे लोग हैं जिनमें साहस, कर्तव्य एवं जीवन-बलिदान की चिनगारी सोई हुई होती है। उस चिनगारी में तनिक भी हवा लगी तो वह जागृत हो जाती है। परंतु जिनके जीवन में जीना ही महत्त्वपूर्ण है, जो जीने के लिए कुछ भी खोने को तैयार हो जाते हैं। साँप में भी परंतु नव जीवन का संचार हुआ होगा उसने उड़ने का प्रयास किया होगा।

अध्याय-18

टोपी

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

(च) ✗ (छ) ✗ (ज) ✓

2. (क) गवरा और गौरैया परम संगी थे।

(ख) गौरैया गवरा से बात कर रही थी।

(ग) गवरा समझदार और थोड़ा शक्की था। गौरैया स्वभाव की जिद्दी और धुन की पक्की थी।

(घ) गौरैया को चुगते-चुगते रुई का एक फाहा मिल गया।

(ङ) दर्जी ने मनोयोग से गौरैया की टोपी बनाई और उसमें पाँच फुँदना भी लगा दिया।

(च) राजा टोपी की खूबसूरती देखकर दंग रह गया।

(छ) टोपी को देखते समय राजा सोच रहा था कि इसके राज में उसके सिवा इतनी खूबसूरत टोपी दूसरे के पास कैसे पहुँची।

(ज) राजा गौरैया के निडर और मुँहफट आवाज़ से घबरा रहा था।

(झ) राजा टोपी की खूबसूरती देख उसे नहीं मसल पाया।

(ञ) राजा को गौरैया ने डरपोक कहा।

(ट) गौरैया का मन टोपी पहनने का था।

3. (क) जब गौरैया ने उसकी मजदूरी देने को कहा तो वह सूत से कपड़ा बुनने को तैयार हो गया। इस पंक्ति का आशय है कि एक मजदूर से कभी भी बिना मजदूरी दिए काम नहीं कराना चाहिए। यदि वह मजदूरी नहीं पाएगा तो भूखे पेट काम कैसे करेगा।

(ख) धुनिया का शरीर तो जर्जर था ही, उसके तन पर वस्त्र भी पुराने और तार-तार हो चुके थे। उसके शरीर पर वर्षों पुरानी एक मिर्जई थी जो चिथड़े-चिथड़े हो चुकी थी। ठंड का मौसम था। वहाँ का राजा और उसके कर्मचारी जनता का शोषण कर जनता को गरीब बनाए जा रहे थे।

(ग) गौरैया की बात सुनकर राजा को अपने अपमान की अनुभूति हुई। उसको अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर क्रोध आ रहा था कि उसके इतना शक्तिशाली होने पर भी एक चिड़िया की यह मजाल कि एक चिड़िया उसे अपमानित करे। वह कुद्ध हो उठा।

4. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (iii)
(ङ) (iii) (च) (i) (छ) (iv) (ज) (iii)

5. (क) गौरैया और गवरा दोनों एक दूजे के लिए बने थे और एक-दूसरे के परम संगी थे। जहाँ जाते, दोनों एक साथ। दोनों हँसते, साथ ही रोते, एक साथ खाते-पीते, एक साथ सोते। प्रातः काल होते ही दोनों एक साथ खोंते (घोंसले) से दाना चुगने के लिए निकल पड़ते। शाम होते ही विश्राम हेतु घोंसले में आ जाते।

(ख) गौरैया गवरा से कपड़े पहनने के विषय में बोली, आदमी को देखते हो, कैसे रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं, कितना फबता है उनके शरीर पर कपड़ा। गवरा के कपड़े पहनने के विरुद्ध बोलने पर गौरैया बोली, कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए ही नहीं पहने जाते, मौसम की मार से बचने के लिए भी पहने जाते हैं।

(ग) आदमी के कपड़े पहनने के विषय में गवरा बोला, कपड़े पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है। आदमी के कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ढँक जाती है। इसके अतिरिक्त कपड़े पहनने से जाड़ा-गरमी-बरसात सहने की मनुष्य की क्षमता भी क्षीण हो जाती है।

(घ) धुनिया ने गौरैया को इसलिए भगाना चाहा कि वह समझ रहा था कि यह भी मुफ़्त में काम कराने आई है। इससे मिलना तो कुछ है नहीं। धुनिया गरीबी की मार झेल रहा था, राजा की राजाज्ञा और मुफ्तखोरी से परेशान था। इसीलिए उसे भगाना चाहता था। धुनिया को राजा की रजाई भी बनानी थी।

(ङ) कोरी ने गौरैया का काम करने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि गौरैया से काम के बदले कुछ मिलने की संभावना नहीं थी। उसे राजा की अचकन के लिए सूत भी कातने थे। इसलिए उसने गौरैया का काम करने से मना कर दिया।

(च) बुनकर ने गौरैया से कुछ न मिलने की उम्मीद के कारण बहाना बनाया कि उसे राजा के लिए बागा बुनना है। अभी राजा के कारीगर आते ही होंगे। परंतु जब गौरैया ने उसको मजदूरी देने की बात की तो उसने उसके सूत का कपड़ा बुन दिया।

(छ) दर्जी ने गौरैया की टोपी बना दी और उसमें पाँच फुँदने भी लगा दिए। फुँदने वाली टोपी पहनकर गौरैया अपने आपे में न रही। वह डेढ़ टाँगों पर ही नाचने लगी और फुदक-फुदक कर गवरा को दिखाने लगी- देख, मेरी टोपी सबसे निराली पाँच फुँदने वाली।

(ज) एक सिपाही ने गुलेल मारकर गौरैया की टोपी नीचे गिरा दी और दूसरे सिपाही ने टोपी लपक कर राजा के सामने पेश कर दी।

(झ) टोपी वापस पाने के बाद गौरैया उड़-उड़कर कहने लगी— यह राजा डरपोक है, निरा डरपोक, मुझसे डर गया, तभी तो इसने मेरी टोपी लौटा दी।

(ज) इस पाठ गौरैया का चरित्र यह सिद्ध करता है कि कार्य की पूर्णता और सफलता के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति और उत्साह आवश्यक है। राजा को स्वार्थी नहीं होना चाहिए, प्रजावत्सल होना चाहिए।

6. (क) घुड़सवार (ख) जिद्दी/हठी (ग) बुनकर (घ) दर्जी (ङ) धुनिया

7. खानेवाला, गानेवाला

   पढ़ाई, त्यागी, भोगी

   दुकानदार, कर्ज़दार, देनदार

8. हँसते—रोते आदमी—स्त्री अच्छा—बुरा राजा—रंक खुशी—दुखी

   ज़िंदगी—मृत्यु सख्ती—कोमलता

9. काँपते उँगलियाँ

   रंग कंगूरे

   दंग चंपी

   मंत्री ढँक

10. इसमें कोई संदेह नहीं कि वस्त्र (पोशाक) मनुष्य के व्यक्तित्व का प्रथम परिचायक है। वस्त्र मनुष्य की रुचि, उसकी प्रकृति का परिचायक है। इसका उदाहरण है— फिल्म में अभिनय। फिल्म अभिनेता वस्त्र के माध्यम से ही नायक और खलनायक बन जाते हैं। अतः मनुष्य की प्रकृति का प्रथम परिचायक वस्त्र ही है। परंतु विवेकवान व्यक्ति मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान उसके सद्गुणों से, विद्वता से एवं गाम्भीर्य से करता है। वस्त्र व्यक्तित्व का परिचायक तभी तक है जब तक अभिव्यक्ति का अवसर नहीं उत्पन्न होता। अभिव्यक्ति का अवसर उपस्थित होने पर उसके सद्गुण सद्चरित्र और सद्ज्ञान व्यक्तित्व का निरुपण करते हैं।

11. राजा को प्रजावत्सल होना चाहिए। राजा प्रजा का पालक होता है। जिस प्रकार पिता अपने बच्चों को बिना भोजन-वस्त्र का प्रबंध किए स्वयं का भी नहीं करता उसी प्रकार राजा को भी प्रजा का खयाल रखना चाहिए। यदि राजा प्रजा को पीड़ित करके अपने ऐश्वर्य का साधन जुटाता है, वह प्रजा पीड़क, निरंकुश और अधर्मी कहलाता है। प्रजा का पालन राजधर्म के अंतर्गत आता है। अतः राजा को कभी भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे प्रजा को कष्ट हो।

    यदि मैं राजा होता तो राजा जनक की भाँति प्रजा का पालन करता। प्रजा का सुख हमारा सुख और प्रजा का दुख हमारा दुख होता।